• जयपुर, गुरुवार, 24 अक्टूबर 24 • वर्ष 14 • अंक 68 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

पेज @3 राज बदला , भाजपा काल में बने मौखम विलास पैनोरमा की दशा भी सुधरेगी 6.6 करोड़ ...

पेज @4 आवासन मंडल की परियोजनाओं में दीपोत्सव पर स्ट्रीट लाइटिंग की समुचित...

पेज @8 पुलिस विभाग में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सतत फोकस हो: ....

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

न्यूज अपडेट

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी की बड़ी कार्रवाई, एआईएडीएमके के पूर्व मंत्री के परिसर पर की छापेमारी

नई दिल्ली/एजेंसी। ईडी ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एआईएडीएमके के पूर्व मंत्री वैथियलिंगम समेत कई अन्य के परिसर पर छापेमारी की है। यह छापेमारी चेन्नई समेत चार अलग-अलग शहरों में की गई। बता दें कि वैथियलिंगम को पूर्व मुख्यमंत्री पनीरसेल्वम का करीबी माना जाता है। ईडी की यह जांच चेन्नई मेट्रोपॉलिटन विकास प्राधिकरण के कार्यों के लिए मंजूरी देने में कथित लेन-देन से संबंधित है। उस समय वैथियलिंगम तमिलनाडु आवास विकास मंत्री के रूप में कार्यरत थे। उन्हें 2022 में पूर्व सीएम एडाप्पडी के. पलानीस्वामी के नेतृत्व में परीनसेल्वम के साथ पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था। सतर्कता एवं भ्रष्टाचार निरोधक निदेशालय (डीवीएसी) ने पिछले महीने वैथियलिंगम और उनके बड़े बेटे वी. प्रभु के खिलाफ भ्रष्टाचार में शामिल होने के आरोप में मामला दर्ज किया था।

प्रियंका गांधी ने वायनाड सीट से दाखिल किया नामांकन, राहुल और सोनिया रहे मौजूद

वायनाड/एजेंसी। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने बुधवार को वायनाड लोकसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। वे पहली बार कोई चुनाव लड़ रही हैं। वायनाड लोकसभा सीट पर 13 नवंबर को उपचुनाव होंगे। इसी के मद्देनजर यहां से कांग्रेस ने प्रियंका गांधी को मैदान में उतारा है। उन्होंने बुधवार को अपने नामांकन पत्रों के तीन सेट दाखिल किए। इस अवसर पर प्रियंका के पति रॉबर्ट वाड्रा और बेटा भी मौजूद रहा। इसके अलावा उनकी मां और पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी भी दिखीं। प्रियंका के नामांकन के दौरान अधिकारियों ने बताया कि उम्मीदवार के साथ केवल पांच लोग ही नामांकन के समय मौजूद रह सकते हैं। इसी कारण थोड़ी देर बाद प्रियंका गांधी के पति और उनके बेटे कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल चैंबर से बाहर आ गए। प्रियंका गांधी के नामांकन पत्र दाखिल करते समय उनके भाई और लोकसभा में विपक्षी नेता राहुल गांधी भी मौजूद रहे। उन्होंने वायनाड की जिला कलेक्टर मेघश्री के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया। प्रियंका ने नामांकन से पहले अपने भाई राहुल गांधी के साथ एक रोड शो किया और इसके बाद रैली को संबोधित किया, जिसमें कांग्रेस के कई नेता मौजूद रहे।

ब्रिक्स के मंच से पीएम मोदी ने चीन समेत पूरी दुनिया को दी नसीहत

आतंकवाद पर दोहरे रवैये की जगह नहीं: पीएम मोदी

कजान/एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रूस के कजान शहर में आयोजति ब्रिक्स समिट में शामिल हुए. ब्रिक्स के मंच से उन्होंने चीन, रूस समेत पूरी दुनिया को नसीहत दी कि जंग किसी भी समस्या का समाधान नहीं है. पीएम मोदी ने कहा- हम युद्ध नहीं, डायलॉग और डिप्लोमेसी का समर्थन करते हैं. पीएम जब संबोधित कर रहे थे, तो उनके अगल-बगल चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन मौजूद थे.

आज की बैठक के शानदार आयोजन के लिए मैं राष्ट्रपति पुतिन का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं. मुझे बहुत खुशी है कि आज हम पहली बार एक्सटेंडेड ब्रिक्स फैमिली के रूप में मिल रहे हैं. ब्रिक्स परिवार से जुड़े सभी नए सदस्यों और साथियों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूं. पिछले एक वर्ष में, रूस की सफल अध्यक्षता के लिए मैं राष्ट्रपति पुतिन का अभिनन्दन करता हूं.

पीएम मोदी ने कहा, ब्रिक्स का सम्मान किया जाना चाहिए. जोहान्सबर्ग शिखर सम्मेलन में हमने जिन मार्गदर्शक सिद्धांतों, मानकों, मानदंडों और प्रक्रियाओं को अपनाया, उनका सभी सदस्य और भागीदार देशों को पालन करना चाहिए. हमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे वैश्विक संस्थानों में सुधार के लिए समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए. आतंकवाद पर दोहरे रवैये की कोई जगह नहीं है. इसे निपटने के लिए ब्रिक्स के सभी देशों को आगे आना होगा. फ्रेंड्स, हमारी बैठक एक ऐसे समय में हो रही है जब विश्व युद्धों, संघर्षों, आर्थिक अनिश्चितता, क्लाइमेट चेंज आतंकवाद जैसी अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है. विश्व में नार्थ-साउथ और पूर्व-पश्चिम डिवाइड की बात हो रही है. महंगाई की रोकथाम, फूड सिक्योरिटी, एनर्जी सिक्योरिटी, हेल्थ सिक्योरिटी, वॉटर सिक्योरिटी, सभी देशों के लिए प्राथमिकता के विषय हैं. और, टेक्नोलॉजी के युग में, साइबर सिक्योरिटी, डीप फेक, डिसिइंफॉर्मेशन जैसी नई चुनौतियां बन गई हैं. ऐसे में, ब्रिक्स को लेकर बहुत अपेक्षाएं हैं.

मेरा मानना है कि एक डाइवर्स और इन-क्लूसिव प्लेटफॉर्म के रूप में, ब्रिक्स सभी विषयों पर सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है. इस संदर्भ में हमारी अप्रोच पीपुल सेंट्रिक होनी चाहिए. हमें विश्व को यह संदेश देना चाहिए कि ब्रिक्स विभाजनकारी नहीं, जनहितकारी समूह है. हम युद्ध नहीं, डायलॉग और डिप्लोमेसी का समर्थन करते हैं. और, जिस तरह हमने मिलकर कोवडि जैसी चुनौती को परास्त किया, उसी तरह हम भावी पीढ़ी के सुरक्षित, सशक्त और समृद्ध भविष्य के लिए नए अवसर पैदा करने में पूरी तरह सक्षम हैं.

आतंकवाद और टेरर फाइनेंसिंग से निपटने के लिए हम सभी को एक मत हो कर दृढ़ता से सहयोग देना होगा. ऐसे गंभीर विषय पर दोहरे मापदंड के लिए कोई स्थान नहीं है. हमारे देशों के युवाओं में रेडिक्लिाइजेशन को रोकने के लिए हमें सक्रिय रूप से कदम उठाने चाहिए. यूएन में कंप्रहेंसिव कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल टेररज्मि के लंबित मुद्दे पर हमें मिलकर काम करना होगा. उसी तरह साइबर सिक्योरिटी, सेफ और सिक्योर एआई के लिए ग्लोबल रेगुलेशंस के लिए काम करना चाहिए.

भारत नए देशों का ब्रिक्स पार्टनर के रूप में स्वागत करने के लिए तैयार है. इस संबंध में सभी निर्णय सर्वसम्मति से होने चाहिए और इफ्क्टर के फाउंडिंग मेंबर्स के विचारों का सम्मान करना चाहिए. जोहानसबर्ग समिट में जो गाइडिंग प्रिंसिपल्स, स्टैंडर्ड , क्राइटेरिया और प्रोसजिर्स हमने अपनाया था, उनका पालन सभी सदस्य और पार्टनर देशों को करना चाहिए.

ब्रिक्स ऐसा संगठन है, जो समय के अनुसार खुद को बदलने की इच्छा-शक्ति रखता है. हमें अपना उदाहरण पूरे विश्व के सामने रखते हुए ग्लोबल इंस्टीट्यूशंस में सुधार के लिए एकमत होकर आवाज़ उठानी चाहिए.

हमें यूएन सिक्योरिटी काउंसलि, मल्टीलेटरल डेवपलमेंट बैंक्स, वल्ड ट्रेड आर्गनाइजेशन जैसे वैश्विक संस्थानों में सुधार के लिए समयबद्ध तरीके से आगे बढ़ना चाहिए. ब्रिक्स के प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए हमें ध्यान रखना चाहिए कि इस संगठन की छवि ऐसी न बने कि हम ग्लोबल इंस्टीट्यूशंस में रिफार्म नहीं, बल्कि उन्हें रिप्लेस करना चाहते हैं. ग्लोबल साउथ के देशों की आशाओं, आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए. वाइस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट और अपनी जी 20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने इन देशों की आवाज को वैश्विक मंच पर रखा है.

बेंगलुरु में निर्माणाधीन इमारत गिरने से मरने वाले लोगों की संख्या पांच हुई

बेंगलुरु/एजेंसी। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में मंगलवार रात को भारी बारिश के कारण एक 7 मंजिला इमारत गिर गई। इस हादसे में मरने वालों की संख्या पांच हो गई है।

मंगलवार को हुए हादसे में जान गंवाने वालों की संख्या पांच हो गई है, और इतने ही लोग घायल बताए जा रहे हैं। जबकि अब तक 13 लोगों को रेस्क्यू किया जा चुका है। बिल्डिग में बचाव राहत कार्य लगातार जारी है। अभी भी मलबे में कुछ लोगों के दबे होने की खबर है।

बेंगलुरू हादसे के बाद कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने मंगलवार देर रात घटनास्थल का दौरा किया था और ढह चुकी इमारत में 21 लोगों के दबे होने की बात कही थी। उन्होंने बताया था कि बचाव अभियान जारी है और तलाशी अभियान के लिए बड़ी मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। मलबा हटाने के लिए बड़ी मशीनों का इस्तेमाल करते समय मलबा अंदर फंसे लोगों पर गिरने की आशंका है। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम को काम पर लगाया गया है। अग्निशमन बल और आपातकालीन सेवा महानिदेशक टीम के साथ मौके पर हैं।

जब तेल टैंकर से ऑयल नहीं, निकलने लगी शराब, पुलिस भी हैरान

मुजफ्फरपुर/एजेंसी।

बिहार में शराबबंदी के बावजूद शराब तस्कर नए-नए तरीके से शराब की तस्करी कर रहे हैं। ताजा मामला मुजफ्फरपुर जिले से सामने आया है, जहां हिंदुस्तान पेट्रोलियम के एक तेल टैंकर में शराब भरकर लाई जा रही थी। इस अजीबोगरीब तरीके से शराब तस्करी को देखकर पुलिस भी हैरान रह गई। उत्पाद विभाग की टीम ने मुजफ्फरपुर-हाजीपुर मार्ग पर सकरी सरैया से इस तेल टैंकर को जब्त किया है। टैंकर में अरुणाचल प्रदेश में बनी 200 पेटी विदेशी शराब और बीयर बरामद हुई है। हालांकि, शराब तस्कर मौके से फरार हो गए। उत्पाद विभाग के अनुसार, शराब तस्करों ने तेल टैंकर का इस्तेमाल इसलिए किया क्योंकि इससे पुलिस को शक नहीं होता। टैंकर का नंबर नागालैंड का था और इसे मुजफ्फरपुर में ही अनलोड किया जाना था। पुलिस ने इस मामले में जांच शुरू कर दी है। पुलिस उन लोगों की तलाश कर रही है जिन्होंने इस शराब तस्करी का मास्टरमाइंड किया था। साथ ही, पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि यह शराब कहां से लाई गई थी। यह मामला एक बार फिर बिहार में शराबबंदी कानून की प्रभावशीलता पर सवाल खड़े करता है। हालांकि, सरकार का दावा है कि शराबबंदी से बिहार में अपराध में कमी आई है।

औद्योगिक शराब उत्पादन पर कानून बनाने की राज्य की शक्ति को नहीं छीना जा सकता, सुप्रीमकोर्ट ने पुराने फैसले को पलटा

नई दिल्ली/एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने औद्योगिक शराब के उत्पादन को लेकर फैसला सुनाते हुए केंद्र सरकार को झटका दिया है। सुप्रीम कोर्ट की 9 जजों की संवैधानिक पीठ ने 7 जजों की पीठ का फैसला पलटते हुए कहा कि औद्योगिक शराब पर कानून बनाने की राज्य की शक्ति को नहीं छीना जा सकता। पीठ ने कहा कि केंद्र के पास औद्योगिक एल्कोहल के उत्पादन पर विनियामक शक्ति का अभाव है। सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला 8:1 के बहुमत से दिया है।

बता दें कि साल 1997 में सात जजों की पीठ ने अपने फैसले में केंद्र सरकार को औद्योगिक एल्कोहल के उत्पादन को विनियमित करने का अधिकार दिया था। साल 2010 में इस मामले को नौ जजों की पीठ के पास समीक्षा के लिए भेजा गया। नौ जजों की पीठ ने अपने फैसले में कहा है कि 'औद्योगिक एल्कोहल मानव उपभोग के लिए नहीं है।' पीठ ने कहा कि 'संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत राज्य सूची की प्रविष्टि 8, राज्यों को मादक मदिरा के निर्माण, परिवहन, खरीद और बिक्री पर कानून बनाने का अधिकार देती है।' वहीं केंद्र सरकार के अधिकार वाले उद्योगों की सूची संघ सूची की प्रविष्टि 52 और समवर्ती सूची की प्रविष्टि 33 में दी गई है। समवर्ती सूची के विषयों पर केंद्र और राज्य विधानमंडल, दोनों को कानून बनाने का अधिकार है, लेकिन केंद्रीय कानून को राज्य के कानून पर प्राथमिकता देने का प्रावधान है।

कई इलाकों में एक्यूआई पहुंचा 349 के पार

दिल्ली में सांस लेना हुआ मुश्किल, प्रदूषण से आंखों में जलन

नई दिल्ली/एजेंसी।

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण का स्तर बेहद खराब श्रेणी में चला गया है। दिवाली से पहले है दिल्ली गैस चेंबर बनने की तरफ बढ़ रही है। हवा में जहरीली गैसों की मात्रा भी बढ़ गई है। कइ इलाकों में एक्यूआई 349 पर पहुंच गया है। दिल्ली के स्थानीय लोगों ने कहा कि दिवाली से पहले इतना प्रदूषण है कि आंखों में जलन और सांस लेने में दिक्कत आ रही है। जनता का कहना है कि सरकार को कुछ उपाय करने चाहिए। बीते मंगलवार को दिल्ली का एक्यूआई सोनीपत के बाद देश में सबसे अधिक दर्ज किया गया। देश के 252 केंद्रों में मंगलवार को सोनीपत, दिल्ली, जींद और श्री गंगानगर में एक्यूआई बेहद खराब रहा। समस्या को देखते हुए दिल्ली सरकार ने पानी का छिड×काव सहित दूसरे उपाये तेज करने का निर्देश दिया है। साथ ही सड×कों पर वाहन कम करने के लिए पर्यावरण मंत्री ने डीटीसी और मैट्रो को फ्रीक्वेंसी और फेरे बढ़ाने के निर्देश दिया है। सड×कों से निजी परिवहन को कम करने के लिए वाहन पार्किंग शुल्क में वृद्धि को लेकर संबंधित विभाग को जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया गया है। डॉक्टरों ने लोगों को सुबह और शाम के समय बाहर जाने से बचने की दी सलाह दी है। केंद्रीय प्रदूषण नियत्रंण बोर्ड के मुताबिक दिल्ली में मंगलवार देर शाम आनंद विहार सहित कई क्षेत्रों में प्रदूषण का स्तर खतरनाक हो गया।

हरियाणा में पराली जलाने वालों पर सख्त कार्रवाई, अब तक 19 किसानों के खिलाफ मुकदमा

पलवल/एजेंसी।

किसानों द्वारा पराली जलाए जाने के मामलों को लेकर कृषि विभाग सख्त है। अब तक 19 किसानों पर मुकदमा दर्ज किया जा चुका है। इसके अलावा, पराली जलाने वाले किसानों से 55 हजार रुपये का जुर्माना वसूला जा चुका है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग पलवल के सहायक तकनीकी प्रबंधक अतुल कुमार शर्मा ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा, जिला उपायुक्त डॉ. हरीश कुमार वशिष्ठ ने फसल अवशेष प्रबंधन स्कीम के तहत नियुक्त ग्राम स्तरीय नोडल अधिकारी, खंड स्तरीय निगरानी टीम और उप-मंडल स्तरीय निगरानी टीम के अधिकारियों और कर्मचारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने कार्यक्षेत्र में हर समय फील्ड में तैनात रहें। जिन किसानों द्वारा आगजनी की जा रही है, उनके विरुद्ध एनजीटी के दिशा-निर्देशानुसार कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा, विभाग की टीमों द्वारा किसानों को पराली में आग लगाने से होने वाले नुकसान के बारे में जानकारी दी जा रही है और पराली में आग न लगाने को लेकर जागरूक किया जा रहा है, क्योंकि इससे न केवल वातावरण प्रदूषित होता है, बल्कि भूमि में उपस्थित मित्र कीट व अन्य लाभदायक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं, जो कि भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में सहायक होते हैं।

दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण पर हरियाणा और पंजाब सरकार को सुप्रीम कोर्ट की कड़ी फटकार :

कोई गंभीरता नहीं, पूरी तरह नाकाम

नई दिल्ली/एजेंसी। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के लगातार बिगड़ते हालात पर सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को हरियाणा और पंजाब सरकारों को जमकर फटकार लगाई। कोर्ट ने पराली जलाने के मुद्दे को लेकर सरकारों की निष्क्रियता पर सवाल उठाते हुए कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के उपायों में दोनों राज्य पूरी तरह से विफल साबित हुए हैं। प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा सरकार को फटकार लगाई है. कोर्ट ने कहा है कि दोनों सरकारें पूरी तरह से नाकाम साबित हुई हैं. पराली जलाने के खिलाफ कदम उठाने को लेकर कोई गंभीरता नहीं है. अदालत में गलत बयानी की जा रही है. सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब और हरियाणा सरकार द्वारा पराली जलाने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई न करने पर कड़ी आपत्ति जताई।सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अगर ये सरकारें वाकई कानून लागू करने में दिलचस्पी रखती हैं तो कम से कम एक मुकदमा तो होना ही चाहिए।

लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल के संपर्क में थे शूटर

● **बाबा सिद्दीकी हत्याकांड में आरोपियों ने किया खुलासा**

मुंबई/एजेंसी। बाबा सिद्दीकी की हत्या मामले की जांच कर रही मुंबई क्राइम ब्रांच ने खुलासा किया है। मुंबई पुलिस का कहना है कि शूटर्स लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोन बिश्नोई के सीधे संपर्क में थे। पुलिस ने बताया कि आरोपियों से पूछताछ में पता चला है कि शूटर लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई के सीधे संपर्क में थे।

मुम्बई क्राइम ब्रांच को जांच के दौरान पहली बार लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई का शूटर्स से सीधा लिंक मिल गया है। सामने आया है कि, हत्या करने वाले शूटर्स ने हत्या से पहले एक इंस्टेंट मैसेजिंग ऐप (स्नैपचैट) के जरिए जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई से बातचीत की थी। अनमोल बिश्नोई भी एक शूटर और साजिशकर्ता प्रवीण लोनकर के संपर्क में था। अनमोल कनाडा और अमेरिका से आरोपियो के संपर्क में था। आरोपियों के पास से चार मोबाइल फोन भी जब्त किए गए हैं।

बता दें क्राइम ब्रांच ने बाबा सिद्दीकी हत्या मामले में अब तक 10 आरोपियो को गिरफ्तार किया है।

संतान की दीर्घायु की कामना का पर्व है अहोई अष्टमी

अष्टमी का व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन किया जाता है। विशेष तौर पर यह पर्व माताओं द्वारा अपनी संतान की लम्बी आयु व स्वास्थ्य कामना के लिए किया जाता है। पुत्रवती महिलाओं के लिए यह व्रत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिन माता–पिता को अपने संतान की ओर से स्वास्थ्य व आयु की दृष्टि से चिंता बनी रहती है, इस पर्व पर माता द्वारा समुचित व्रत व पूजा करने का विशेष लाभ प्राप्त होता है। संतान स्वस्थ होकर दीर्घायु को प्राप्त करती हैं। जिन दम्पतियों के पुत्र नहीं बल्कि पुत्री संतान है वे भी अहोई माता की पूजा कर सकती हैं। सन्तान की कामना वाली महिलाएं भी यह व्रत रखकर अहोई माता से सन्तान प्राप्ति की प्रार्थना कर सकती हैं लेकिन यह भी नियम है कि एक साल व्रत लेने के बाद आजीवन यह व्रत टूटना नहीं चाहिए।

पहले धारणा थी कि सिर्फ सपूतों के लिए ही व्रत रखा जाता है। ऐसा नहीं है। आज के बदलते दौर में जब पुत्री भी माता–पिता के लिए बराबर की मान्यता साकार करती हैं तो पुत्रियों के सुख सौभाग्य के लिए भी अहोई माता कृपालु होती हैं। अहोई अष्टमी का व्रत करवा चौथ के ठीक चार दिन बाद आता है। करवा चौथ पर महिलाएं पति की दीर्घायु की कामना के लिए व्रत करती हैं तो अहोई अष्टमी पर संतान की दीर्घायु के लिए निर्जला व्रत करती हैं। रात में तारों को अर्घ्य देने के बाद व्रत का पारण करती हैं और फिर जल ग्रहण करती हैं। यह व्रत अहोई मैय्या को समर्पित होता है। अहोई अष्टमी का पर्व दीपावली के आरंभ होने की सूचना देता है।

कहा जाता है कि प्राचीन काल में एक साहूकार रहा करता था। साहूकार की पत्नी चंद्रिका बहुत गुणवती थी। साहूकार की बहुत संतानें थीं। वह अपने परिवार के साथ सुख से जीवन यापन कर रहा होता है। एक बार साहूकार की स्त्री घर की लीपा–पोती हेतु मिट्टी लेने खदान में जाती है और कुदाल से मिट्टी खोदने लगती है, परंतु उसी जगह एक सेह की मांद होती है और अचानक उस स्त्री के हाथ से कुदाल सेह के बच्चे को लग जाती है जिससे सेह के बच्चे की मृत्यु हो जाती है। इस घटना से साहूकार की पत्नी को बहुत दुख होता है। मन में पश्चाताप का भाव लिए वह घर लौट जाती है। पर कुछ दिनों बाद उसकी संतानें एक–एक करके मरने लगती हैं। अपने बच्चों की अकाल मृत्यु से पति–पत्नी दुखी रहने लगते हैं। बच्चों की शोक सभा में साहूकार की पत्नी विलाप करती हुई उन्हें बताती है कि उसने जान–बूझकर कभी कोई पाप नहीं किया लेकिन एक बार अनजाने में उससे एक सेह के बच्चे की हत्या हो गई थी। यह सुनकर औरतें साहूकार की पत्नी को दिलासा देती हैं और उसे अष्टमी माता की पूजा करने को कहती हैं। साहूकार की पत्नी दीवार पर अहोई माता और सेह के बच्चों का चित्र बना कर माता की पूजा करती है और अहोई मां से अपने अपराध की क्षमा–याचना करती है। तब मां प्रसन्न हो उसकी होने वाली संतानों को दीर्घ आयु का वरदान देती हैं। तभी से अहोई व्रत की परंपरा प्रचलित हो गई। अहोई माता के चित्रांकन में ज्यादातर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है। उसी के पास सेह तथा उसके बच्चों की आकृतियां बना दी जाती हैं।

उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अहोई माता का स्वरूप वहां की स्थानीय परंपरा के अनुसार बनता है। संपन्न घर की महिलाएं चांदी की अहोई बनवाती हैं। जमीन पर गोबर से लीपकर कलश की स्थापना होती है। अहोई माता की पूजा करके उन्हें दूध चावल का भोग लगाया जाता है। तत्पश्चात एक पाटे पर जल से भरा लोटा रखकर कथा सुनी जाती है। अहोई माता की पूजा के लिए गेरू से दीवार पर अहोई माता का चित्र बनाते हैं तथा साथ ही सेह और उसके बच्चों का चित्र भी बनाते हैं। संध्या में आरती के समय के बाद मां का पूजन करने के बाद अहोई माता की कथा सुनते हैं। पूजा के बाद सास–ससुर के पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त कर बाहर आकाश में दीपक अर्पित करके तारों की पूजा कर जल चढ़ाते हैं। तारों को करवा से अर्घ्य भी दिया जाता है। इस दौरान अहोई माता का जाप भी करते हैं। अष्टमी का चांद देखने के उपरान्त व्रत पूजन पूरा हो जाता है और इसके पश्चात व्रती को जल ग्रहण करके व्रत का समापन करना होता है। पूजा के उपरान्त इस दिन लाल धागे की रक्षा सूत्र बांधकर पुत्र अथवा पुत्री को दीर्घायु का आशीर्वाद देना चाहिए।

अहोई माता पर एक दंतकथा के अनुसार, प्राचीन काल में दतिया नगर में चंद्रभान नाम का एक आदमी रहता था। उसकी बहुत सी संतानें थीं, परंतु उसकी संतानें अल्प आयु में ही अकाल मृत्यु को प्राप्त होने लगती हैं। अपने बच्चों की अकाल मृत्यु से पति–पत्नी दुखी रहने लगे थे। कालान्तर तक कोई सन्तान न होने के कारण वह पति–पत्नी अपनी धन दौलत का त्याग करके वन की ओर चले जाते हैं और बद्रिकाश्रम के समीप बने जल के कुंड के पास पहुंचते हैं तथा वहीं अपने प्राणों का त्याग करने के लिए अन्न–जल का त्याग करके उपवास पर बैठ जाते हैं। इस तरह छह दिन बीत जाते हैं तब सातवें दिन एक आकाशवाणी होती है कि हे साहूकार। तुम्हें यह दुख तुम्हारे पूर्व जन्म के पाप से मिल रह है। अतः इन पापों से मुक्ति के लिए तुम्हें अहोई अष्टमी के दिन व्रत का पालन करके अहोई माता की पूजा अर्चना करनी चाहिए। जिससे प्रसन्न हो अहोई माता तुम्हें पुत्र प्राप्ति के साथ–साथ उसकी दीर्घ आयु का वरदान देंगी।

इस प्रकार दोनों पति–पत्नी अहोई अष्टमी के दिन व्रत करते हैं और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं। अहोई मां प्रसन्न हो उन्हें संतान की दीर्घायु का वरदान देती हैं। वर्तमान समय में भी माताओं द्वारा अपनी सन्तान की इष्टकामना के लिए अहोई माता का व्रत रखा जाता है और सायंकाल अहोई मता की पूजा की जाती है तो निश्चित रूप से इसका शुभफल उनको मिलता ही है और सन्तान चाहे पुत्र हो या पुत्री उसको भी निष्कंटक जीवन का सुख मिलता है। अहोई व्रत के दिन प्रात उठकर स्नान करें और पूजा पाठ करके अपनी संतान की दीर्घायु एवं सुखमय जीवन हेतु कामना करते हुए मैं अहोई माता का व्रत कर रही हूं ऐसा संकल्प करें। अहोई माता मेरी संतान को दीर्घायु, स्वस्थ एवं सुखी रखे। अनहोनी को होनी बनाने वाली माता देवी पार्वती हैं इसलिए माता पार्वती की पूजा करें। अहोई माता की पूजा के लिए गेरू से दीवार पर अहोई माता का चित्र बनाएं और साथ ही सेह और उसके सात पुत्रों का चित्र बनाएं। संध्या काल में इन चित्रों की पूजा करें।

आगामी चुनावों के लिए भाजपा को मिला नया मंत्र

मृत्युंजय दीक्षित

हरियाणा विधानसभा चुनाव की जीत से भारतीय जनता पार्टी में नया उत्साह आ गया है। हरियाणा से भाजपा को विपक्ष के झूठ पर आधारित नैरेटिव ध्वस्त करने का मंत्र मिल गया है। अब झारखंड, महाराष्ट्र राज्यों सहित कई राज्यों की खाली पड़ी विधानसभा तथा दो लोकसभा सीटों पर उपचुनावों की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। इन सभी चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाला राजग गठबंधन अपनी तैयारी में काफी आगे निकल चुका है, गठबंधन ने अपने सहयोगी दलों के साथ सीटों का बंटवारा भी कर लिया है और उम्मीदवारों के चयन का काम पूरा करते हुए अपने नारे भी सेट कर लिये हैं।

हरियाणा विधानसभा चुनाव के परिणाम से स्पष्ट है कि लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा का जो कोर मतदाता किसी कारणवश इधर–उधर चला गया था, वह वापस आ रहा है। लोकसभा चुनाव में संविधान और आरक्षण सहित जातिवार जनगणना का झूठा नैरेटिव चलाने के कारण ओबीसी समाज भाजपा से छिटका, जिसके कारण उसका 400 पार का नारा धरातल पर नहीं उतर सका था। अब भाजपा निराशा के उस भाव से उबर चुकी है।

हरियाणा में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नारे "हिंदू बटेंगे तो कटेंगे" ने हिन्दू जनमानस को नयी चेतना दी थी और अब यही नारा महाराष्ट्र की धरती तक पहुंच गया है। साथ ही हरियाणा में ओबीसी समाज ने जिस प्रकार भाजपा का साथ दिया है उसे ध्यान में रखते हुए भाजपा अब अन्य राज्यों में भी ओबीसी समाज को साधने के लिए हर उपाय करने जा रही है। हरियाणा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के मंत्रिमंडल की पहली बैठक में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति वर्ग के ज्यादा जरूरतमंदों को आरक्षण का लाभ देने के लिए प्रदेश सरकार एससी एसटी वर्ग में उपवर्गीकरण करने जा रही है। हरियाणा सरकार का यह कदम

सर्वोच्च न्यायालय के कोटा में कोटा के ऐतिहासिक निर्णय की भावना के अनुरूप है।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव जीतने के लिए जहां भाजपा ने कमर कस ली है वहीं संघ व विश्व हिंदू परिषद सहित समस्त हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता भी सक्रिय हो गए हैं। बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान सहित विश्व के अनेक देशों में हिंदुओं व सनातन धर्म के आस्था के केंद्रों पर जिस प्रकार हमले किये जा रहे हैं तथा भारत का विपक्ष जिस प्रकार सनातन हिंदू के खिलाफ जहर उगल रहा है उससे उत्पन्न संकट को देखते हुए अब सभी हिंदू संगठनों को यह समझ में आ गया है कि सत्ता कितनी अनिवार्य है। भाजपा के लिए संघ के साथ उसके सभी समवैचारिक संगठन सक्रिय हैं।

विश्व हिंदू परिषद पूरे महाराष्ट्र में साधु–संतों के सम्मेलन करवाने की योजना बना रही है। मंदिर–मठों का प्रतिनिधित्व करने वाले साधु–संत हिंदुत्व, सुशासन, विकास, लोक कल्याण, राष्ट्रीय हित जैसे विषय जनमानस को बतायेंगे। लव जिहाद, धर्मांतरण आदि को रोकने के लिए वहां पर पहले भी कई रैलियां हो चुकी हैं। इसके साथ ही साधु–संत वोट जिहाद के प्रति भी हिंदू जनमानस को जगाने के लिए काम कर रहे हैं और वोट जिहाद के खिलाफ 100 प्रतिशत मतदान करने की बात कर रहे हैं। नागपुर और अकोला में संत सम्मेलन आयोजित किये जा चुके हैं।

संत समाज का कहना है कि लोकसभा चुनाव में जो हुआ वह वोट जिहाद का ही परिणाम था किंतु अब वोट जिहाद का हिसाब उसी तरह किया जायेगा। वोट का प्रतिशत बढ़ाया जाए। हमारा देश, हमारे संस्कार लेकर बढ़े इसलिए हमें अपना मत प्रतिशत बढ़ाना है। विहिप का कहना है कि अब आने वाले सभी निर्वाचनों में ऐसे लोग ही चुनकर आएं जो नीति निर्धारण हिंदू धर्म, हिंदी, संस्कृत, हिंदी परम्परा, हिंदू रीति रिवाज का संरक्षण करने वाले हों। महाराष्ट्र की राजनीति में हिंदुत्व एक बड़ा फैक्टर रहा है और इसी बात को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये हैं जैसे गाय को राज्यमाता का दर्जा दिया जाना।

भाजपा ओबीसी व वनवासी समाज को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हरसंभव प्रयास करेगी क्योंकि 2014 में नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से चुनाव दर चुनाव ओबीसी समाज भाजपा का साथ देता आ रहा है। सबसे अधिक ओबीसी मुख्यमंत्री भाजपा ने ही बनाए हैं। सबसे अधिक ओबीसी विधायक व सांसद भाजपा से ही जीतकर आ रहे हैं। भाजपा ओबीसी समाज के लिए कुछ बड़े निर्णय ले सकती है क्योंकि महाराष्ट्र में भी ओबीसी समाज की एक बड़ी भूमिका है। उत्तर प्रदेश के विधानसभा उपचुनाव में भी हिंदुत्व के साथ जातियों को भी साधने पर काम किया जा रहा है।

भाजपा के रणनीतिकार अब विशिष्ट रणनीतियों पर काम कर रहे हैं। विगत चुनावों में भाजपा ने "बंटेंगे तो कटेंगे" का नारा दिया और सफलता पाई। इसी नारे के बल पर जम्मू के हिंदू भी भाजपा के पक्ष में गोलबंद दिखे। अब यह नारा पूरे भारत में घूमने के लिए तैयार हो रहा है। ओबीसी समाज को आकर्षित करने के लिए सरकार बड़े कदम उठाने जा रही है जिसमें क्रीमीलेयर की सीमा बढ़ाने से लेकर अन्य कई योजनाओं का विस्तार करने पर विचार कर रही है। इसीलिए कहा जा रहा है कि भाजपा ने विपक्ष के नैरेटिव को धराशायी करने का मंत्र खोज लिया है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

प्रथम दीक्षांत का राष्ट्रीय महत्व

डॉ दिलीप अग्निहोत्री

भारत कभी विश्व गुरु हुआ करता था। उसने यह प्रतिष्ठा अपने ज्ञान,विज्ञान व शिक्षण संस्थान के माध्यम से प्राप्त की थी। तब भारत परम वैभव के पद पर आसीन था। उसके प्रताप व शौर्य को दुनिया स्वीकार करती थी। लेकिन भारत ने अपने मान्यताओं के प्रसार के लिए शक्ति शौर्य का प्रयोग नहीं किया। बल्कि वसुधा को कुटुंब मानते हुए सभी के कल्याण का विचार दिया। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ऐसी महान विरासत पर गर्व का सन्देश देते है। पहले भी वह कहते रहे है कि जो पीढ़ी अपने अतीत पर स्वाभिमान नहीं करती, उससे प्रेरणा नहीं लेती,वह पिछड़ जाती है। किसी शिक्षण संस्थान से संबंधित कार्यक्रम में योगी यह सन्देश अवशय देते है। वह चाहते है कि संस्थान से जुड़े लोग राष्ट्रीय स्वाभिमान से प्रेरित होकर आगे बढ़ें। पिछले दिनों उन्होंने लखनऊ सैनिक स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह की तैयारियों के संबन्ध में भी यह कहा था। उनका कहना था कि समारोह भारतीय संस्कृति व शौर्य को प्रदर्शित करने वाले होने चाहिए। एक अन्य अवसर पर उन्होंने कि विश्वविद्यालय का स्वरूप भारतीय परम्परा, संस्कृति, शौर्य एवं पराक्रम को दर्शाता हुआ होना चाहिए। राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर विश्वविद्यालय का निर्माण योगी आदित्यनाथ का ड्रीम प्रोजेक्ट था। तीन वर्ष पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अलीगढ़ में राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर यूनिवर्सिटी का शिलान्यास किया था। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने अलीगढ़ में राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम एक राज्य स्तरीय यूनिवर्सिटी खोलने की घोषणा की थी।

योगी आदित्यनाथ पांच वर्ष पूर्व कहा था कि महाराजा महेंद्र प्रताप ने ब्रिटिश को बहुत बड़ी चुनौती दी थी। वह अलीगढ़ के राजा थे। उन्होंने अफगानिस्तान जाकर आजाद हिंद फौज की टीम गठित की थी। शिलान्यास समारोह में नरेंद्र मोदी ने कहा था कि स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महान विभूतियों ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था। लेकिन यह देश का दुर्भाग्य रहा है कि आज़ादी के बाद ऐसे राष्ट्र नायक और नायिकाओं को अगली पीढियों को परिचित ही नहीं कराया गया.

राजा महेंद्र प्रताप सिंह स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रहे हैं, उन्होंने भारत की पहली निर्वासित सरकार बनाई. उन्होंने समाज के लिए कई तरह के संस्थान खोले थे. एएमयू जैसी यूनिवर्सिटी के लिए उन्होंने ज़मीन दी थी. लेकिन उनके योगदान को पूरी तरह भुला दिया गया। महात्मा गांधी ने महेंद्र प्रताप सिंह के बारे में कहा था था कि राजा महेंद्र प्रताप के लिए 1915 में ही मेरे हृदय में आदर पैदा हो गया था। उससे पहले भी उनकी ख्याति का हाल अफ़्रीका में मेरे पास आ गया था। उनका पत्र व्यवहार मुझसे होता रहा है जिससे मैं उन्हें अच्छी तरह से जान सका हूं। उनका त्याग और देशभक्ति सराहनीय है। आधुनिक युग में तकनीक व भौतिक सुविधाओं का खूब विकास हुआ। लेकिन विकास की दौड़ में सामाजिक व मानवीय संवेदनाओं का महत्व कम हुआ है। उपभोगवादी सभ्यता ने अनेक प्रकार की अन्य समस्याओं को भी जन्म दिया है। प्रकृति व पर्यावरण संबंधी संकट भी बढ़ रहा है। ऐसे में संतुलित विकास पर ध्यान देना अपरिहार्य हो गया है। यह कार्य पाश्चात्य सभ्यता के माध्यम से नहीं हो सकता। उन्हें तो अपनी समस्याओं का समाधान दिखाई नहीं दे रहा है क्योंकि उनका चिंतन इसके अनुरूप नहीं है। जबकि भारत के प्राचीन ऋषियों मनीषियों का चिंतन शाश्वत है। यह आज भी प्रासंगिक है। राजा महेन्द्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, अलीगढ़ का प्रथम दीक्षांत समारोह में यह भारतीय परिवेश के अनुरूप शिक्षा रेखांकित हुई।उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ तथा प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल राजा दीक्षांत संबोधन दिया। वस्तुतः

नई शिक्षा नीति भारतीय परिवेश के अनुरूप है। इसमें सांस्कृतिक चेतना के साथ आधुनिक विकास को महत्व दिया गया। भारत की यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में बड़ा योगदान देगी। बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय देश के युवाओं के लिए नए अवसर का सृजन करेगी। यह अंतर अनुशासनात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ भारत को अनुसंधान एवं विकास का वैश्विक हब बनाने में सहायक होगी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक नई कल्पना का सूत्रपात किया है। यह एक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण से जुड़ी दृष्टि को रेखांकित करने वाली है। हजारों उच्च शिक्षण संस्थानों ने स्किल इंडिया से जुड़े कोर्सों की शुरुआत की है। अनेक भाषाओं में इंजीनियरिंग की पढ़ाई संभव होगी। इंजीनियरिंग के कोर्स का इन भाषाओं में अनुवाद शुरू हो चुका है। मातृभाषा में पढ़ाई से गरीबों का बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। प्रारंभिक शिक्षा में भी मातृभाषा को प्रमोट करने का काम शुरू हो गया है। शिक्षा में भाषा सभ्यता संस्कृति सामाजिक मूल्यों को समुचित स्थान मिल रहा है। ऐसी शिक्षा नीति ही राष्ट्रीय स्वाभिमान का जागरण करती है। अंग्रेजों द्वारा भारत में शुरू की गई शिक्षा राष्ट्रीय स्वाभिमान को हीनता में बदलने वाली थी। शिक्षा केवल बाबू बनाने के लिए होगी,तो उससे व्यक्ति समाज और राष्ट्र का अपेक्षित लाभ नहीं हो सकता। मानवीय दृष्टिकोण का भाव भी होना चाहिए। भारत में तो जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष बताया गया। उसी के अनुरूप सभी कार्यों का संदेश दिया गया। आधुनिक युग में होने वाले सकारात्मक बदलाव को स्वीकार करना अनुचित नहीं। लेकिन यह सब अपनी महान विरासत के प्रतिकूल नहीं होना चाहिए। वर्तमान सरकार ने सही दिशा में कदम उठाया। नई शिक्षा नीति बनाई। स्कूली पाठ्यक्रम को व्यावहारिक बनाया गया। बुनियादी योग्यता को महत्व मिलेगा। क्लास छह से व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ हो जाएगी। पांचवीं कक्षा तक मातृभाषा क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई होगी। उच्च शिक्षा में अवसर बढ़ेंगे। इसके पाठ्यक्रम में विषयों की विविधता होगी। ट्रांसफर ऑफ क्रेडिट की सुविधा के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट की स्थापना हो रही है। नई शिक्षा नीति स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों में बहुभाषावाद को बढ़ावा देती है। पाली,फारसी और प्राकृत के लिए राष्ट्रीय संस्थान, भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की स्थापना की जाएगी। अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट और विद्या प्रवेश सहित नए शैक्षणिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अथवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कार्यक्रम युवाओं को भविष्योन्मुखी बनाएगा। इससे संचालित अर्थव्यवस्था के रास्ते खोलेगा। दीक्षांत समारोह में उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस राज्य विश्वविद्यालय का नाम देशभक्त,राष्ट्रीय नायक और स्वतंत्रता सेनानी राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नाम पर रखा गया है। राजा महेंद्र प्रताप सिंह को स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अहम स्थान मिलना चाहिए था। उन्होंने 1915 में काबुल में भारत की पहली अस्थाई सरकार की स्थापना की, जो ब्रिटिश शासन के 1935 के भारत सरकार अधिनियम की कल्पना करने से भी दो दशक पहले की बात है। ऐसे महान नायकों की इन प्रेरक कहानियों को हमारी पाठ्य पुस्तकों में अब तक कोई उल्लेख नहीं मिलता है। यह स्वतंत्रता के इतिहास के साथ छेड़छाड़ की एक दर्दनाक कहानी को बयां करता है।

राजा महेंद्र प्रताप सिंह एक दूरदर्शी शिक्षाविद भी थे। उन्होंने प्रेम महाविद्यालय की स्थापना करके तकनीकी शिक्षा की आवशयकता को दूर किया। इतिहास इसका प्रमाण है कि कोई भी देश तकनीकी क्रांति में अग्रणी हुए बिना उत्कृष्टता हासिल नहीं कर सकता। हम वस्तुतः चौथी औद्योगिक क्रांति में रह रहे हैं, जहां कृषि से लेकर शिक्षा और संचार तक सूचना हमारी सभी गतिविधियों की कुंजी है। आजकल सब कुछ संचार के आसपास ही है। प्रौद्योगिकी एक गेम चेंजर है। इससे पारदर्शी व्यवस्था, जवाबदेह शासन, सेवा वितरण में आसानी और कतार में लगे अंतिम व्यक्ति को लाभ मिलने की उपलब्धि पर व्यापक असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा को महत्ता दी गई, शिक्षा व्यावसायीकरण से प्रेरित नहीं होनी चाहिए।भारत आज सौभाग्य से दुनिया के लिए एक महान विकास प्रौद्योगिकी के मामले में एक बौद्धिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

डिजिटलीकरण, हमारी तकनीकी पैठ, सेवा वितरण के उपयोग को वैश्विक संस्थानों, विश्व बैंक द्वारा सराहा गया है कि जब भी सेवा की बात आती है तो भारत एक रोल मॉडल है। राज्यपाल ने कहा कि भारत पुरातन काल से ही विश्व में शिक्षा का केंद्र रहा है। यहाँ के नालंदा, विक्रमशिक्षा एवं कांचीपुरा विश्वविद्यालय में हजारों–लाखों की संख्या में देश–विदेश के विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते थे। प्रधानमंत्री द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण कराकर उसे संचालित कराया गया है। प्राचीन समय में होने वाली तमिल संगम बैठक भी दीक्षांत समारोह का ही उदाहरण है, ये हमारी वैदिक परम्परा का हिस्सा है।

सरकार की नाक के नीचे विस्फोट त्योहारी सुरक्षा को चुनौती!

मनोज कुमार अग्रवाल

देश की सबसे संवेदनशील व सुरक्षित समझी जाने वाली राजधानी दिल्ली में करवा चौथ के दिन और दीपावली त्योहार के दस दिन पहले विस्फोट की वारदात ने तमाम सुरक्षा एजेंसियों की नींद उड़ा दी है तमाम एजेंसिया जांच में जुटी है। प्रशांत विहार इलाके में रविवार को सीआरपीएफ स्कूल के पास हुए ब्लास्ट में कई एंगल से तफ्तीश हो रही है। सोमवार को सीआरपीएफ की टीम ने जांच की, दूसरी एजेंसी ने मौका मुआयना किया। जांच स्पेशल सेल या फिर केंद्रीय जांच एंजेसी को भी ट्रांसफर हो सकती है। अभी तक जो सामने आया, उसमें शक है कहीं ये किसी पाकिस्तानी आंतकी लिंक से लेकर लोकल ग्रुप का काम तो नहीं। वहीं ये बात भी सामने आ रही है कि ब्लास्ट करने वाला कोई केमिकल मेन है, जिसे केमिकल की अच्छी जानकारी थी। जांच एजेंसी मान रही है कि इसके पीछे कोई बड़ी साजिश का रिहर्सल छिपा हो सकता है ? शायद दहशतगर्द या अलगाववादी संगठन ये देखना चाहते हों कि विस्फोट की घटना पर दिल्ली की जांच एजेंसी कितना सक्रियता दिखाती हैं ? यह भी हो सकता है कि वो हमारी जांच एजेंसियों की जांच को भी परखना चाहते हों? ऐसी आंशका इसलिए जग रही है, क्योंकि दिल्ली पुलिस ने भी किसी बड़ी साजिश से फिलहाल इनकार नहीं किया है।

सबसे ज्यादा चिंताजनक यह है कि दिल्ली के रोहिणी में सीआरपीएफ स्कूल के पास बम विस्फोट के बाद अब देशभर के अन्य राज्यों में सीआरपीएफ स्कूलों में बम विस्फोट को लेकर धमकी दी गई है। खबर है कि देशभर के सीआरपीएफ स्कूलों को ईमेल के जरिये यह धमकी दी गई है। इनमें से दो स्कूल दिल्ली और एक हैदराबाद में हैं। हालांकि ईमेल के फर्जी होने का संदेह है। इसके बावजूद ताजा धमकी ने दिल्ली समेत सभी स्कूलों में दहशत फैला दी है। माना जा रहा है कि यह ईमेल किसी ने दहशत फैलाने के लिए किया है। इनमें से दो स्कूल दिल्ली और एक हैदराबाद में हैं।मेल भेजने वालों ने मेल को लिस्टेड स्कूल के कमरों में नाइट्रेट आधारित आईईडी ब्लास्ट करने की बात कही है। ईमेल भेजने वाले ने सुबह 11 बजे से पहले सभी स्कूलों को खाली करने के लिए भी कहा है। दिल्ली के रोहिणी में सी.आर.पी.एफ. स्कूल में पहले ही धमाका हो चुका है। इस धमाके को लेकर अभी भी सुरक्षा एजेंसिया अभी भी कुछ ठोस जानकारी नहीं हासिल कर पाई हैं। इसे अब भी रहस्यमय विस्फोट बताया जा रहा है। इस मामले में आरोपी अभी भी फरार हैं।

आपको बता दें कि दिल्ली में पहले भी कई बार बम ब्लास्ट और आतंकी घटनाएं हुई हैं। पर.उनमें और इस घटना में कुछ फर्क है। 20 अक्टूबर को सुबह फटे बम के बाद दूर–दूर तक घुआ ही धुआं फैल गया। लोगों को सांस लेने में दिक्कते हुई। तेज बदबू इलाके में फैल गई। आसपास के घरों की नीव भूकंप की भांति हिल गई। गौरतलब है कि गृह मंत्रालय की खुफिया एजेंसी आईबी के पास इस तरह के इनपुट थे कि त्योहारों के वक्त दिल्ली– एनसीआर में कहीं न कहीं कोई अतिंकी घटना घटने की आशंका है। कमोबेश वैसा होता भी दिखाई दिया। खुफिया इनपुट के बावजूद अगर ऐसी घटना घटती है ती कानून तंत्र, खुफिया विभाग, एंटी टेरर विंग पर सवालिया निशान उठना लाजिमी हो जाता है। अगर वह गहरी नींद में न सोते, ती ये हादसा शायद नहीं होता। पर, अकसर होता यही है जिम्मेदार एजेंसियां इस तरह की नाकामी कभी

अपने पर नहीं लेतीं। । दिल्ली में कुछ महीनों बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। बॉर्डर पर किसानों का पहरा है। भीड़भाड़ तो सदैव दिल्ली में रहती ही है। इसके अलावा पूरी केंद्र सरकार, ब्यूरोक्रेट लॉबी सभी यहीं बसती है। इसलिए देश की राजधानी दिल्ली में खुफिया एजेंसियों और कानून तंत्र को चौबीसों घंटे चौकन्ना रहना चाहिए। पर, अफसोस ऐसा होता नहीं? दहशतगर्द उनकी नाक के नीचे घटनाओं को अंजाम देकर चुपके से निकल जाते हैं, उसके बाद जांच के नाम पर लाठी पीटी जाती है। फिलहाल, ऐसी बातों पर गौर न कर, मौजूदा घटना की जड़ तक पहुंचने की आवशयकता है।

दिल्ली के रोहिणी में ब्लास्ट के बाद देर रात पाकिस्तान से चलने वाले टेलीग्राम चैनल पर बम धमाकों के पीछे खालिस्तानी आतंकियों के हाथ होने का दावा किया जा रहा है, देर रात पाकिस्तान से चलने वाले टेलीग्राम चैनल पर इस धमाके में खालिस्तानी उग्रवादियों के शामिल होने का दावा किया गया है, टेलीग्राम चैनल 'जस्टिस लीग इंडिया' पर सीसीटीवी फुटेज डालकर बम धमाके का दावा किया गया है, उसके बाद इस मैसेज को पाकिस्तान से चलने वाले कई टेलीग्राम चैनल पर सर्कुलेट किया गया है, दिल्ली पुलिस सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली पुलिस ने टेलीग्राम मैसेंजर को पत्र लिखकर टेलीग्राम चैनल जस्टिस लीग इंडिया के बारे में जानकारी मांगी है। पुलिस अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जानकारी मांग रही है। टेलीग्राम ने अभी तक दिल्ली पुलिस को कोई जवाब नहीं दिया है। जांच जारी है, धमाके के सिलसिले में अभी तक किसी संगठन का नाम सामने नहीं आया है। सभी पहलुओं की जांच की जा रही हैएफएसएल टीम ने घटनास्थल पर पहुंचकर इसके सैंपल लिए। मौके से सफेद पाउडर और कुछ तारनुमा चीजें भी बरामद हुई हैं। इसी बीच मौके पर दमकल की गाड़ियां भी पहुंची। शुरुआती जांच में आशंका जताई जा रही है कि धमाके में हाई इंटेंसिव एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल किया गया है। छोटा क्रूड बम भी हो सकता है। आतंकी हमला होने की आशंका को देखते हुए एनएसजी की टीम भी मौके पर पहुंच गई है। मौके पर पहुंचने के बाद एनएसजी ने घटनास्थल को अपने कब्जे में ले लिया है। फोरेंसिक साइंस लैबोरेटरी (एफएसएल) टीम के सूत्रों के मुताबिक, शुरुआती जांच में क्रूड बम जैसा मटेरियल मिला है। हालांकि, पूरी रिपोर्ट मिलने के बाद ही आधिकारिक जानकारी मिल पाएगी।

रोहिणी स्थित प्रशांत विहार इलाके में रविवार सुबह हुए धमाके ने एजेंसियों के कान खड़े कर दिए हैं। राष्ट्रीय राजधानी में बीते 13 साल बाद इस तरह का धमाका हुआ है। सुरक्षा एजेंसियों ने पांच घंटे तक घटनास्थल की जांच की। इससे पहले सितंबर 2011 में दिल्ली हाईकोर्ट में धमाका हुआ था जिसमें 11 लोगों की मौत हुई थी। वहीं जनवरी 2022 में गाजीपुर फूल मंडी के गेट पर बैग में आईईडी विस्फोटक बरामद हुआ था। जिसे एनएसजी की बम निरोधक दस्ता की टीम एक बड़ा गड्ढा कर उसमें बम को निष्क्रिय कर दिया था। जांच में सामने आया था कि बम को बनाने में आरडीएक्स और अमोनियम नाइट्रेट के साथ ही छर्रे का इस्तेमाल किया गया था। वहीं दिसंबर 2023 में इजराइली दूतावास के बाहर भी धमाका हुआ था, लेकिन उसमें कोई हताहत नहीं हुआ था।

एएनआई ने सूत्रों के हवाले से बताया कि दिल्ली पुलिस ने सीआरपीएफ स्कूल विस्फोट जांच के सिलसिले में आसपास और सामने के बाजार के सभी सीसीटीवी डीवीआर को अपने कब्जे में ले लिया है। सीसीटीवी फुटेज में एक संदिग्ध को सफेद टी–शर्ट पहने हुए घटनास्थल पर देखा जा सकता है। सूत्रों ने कहा कि विस्फोट से एक रात पहले घटनास्थल पर गतिविधि देखी गई थी। दिल्ली पुलिस के सूत्रों के मुताबिक, विस्फोटक को पॉलीथिन की थैली में लपेटकर आधा से एक फुट गहरे गड्ढे में लगाकर रखा गया था। इसके बाद गड्ढे को कचरे से ढक दिया गया था। रविवार सुबह स्कूल के पास एक तेज धमाका हुआ। रविवार को जिस सीआरपीएफ स्कूल की बाउंड्री के पास ब्लास्ट हुआ वो बंद था। साथ ही वक्त सुबह का था और स्थानीय लोगों की आवाजाही भी न के बराबर थी। अगर ये घटना वर्किंग डे में होती. तो जानमाल का काफी नुकसान हो सकता था । एकाएक दिमाग में सभी के यही आ रहा है कि कहीं कानून–व्यवस्था की तैयारियों की परखना चाहते थे बम ब्लास्ट करके आतंकी? ऐसे अंदेशा पुलिस को भी है। पर जो भी हो. रविवार तड़के स्कूल के बाहर फटे इस बम की तेज आवाज ने पूरी दिल्ली में दहशत जरूर फैला दी है। घटना के बाद पुलिस ने एहतियातन पूरी दिल्ली को अलर्ट पर रखा है और सर्तकता बढ़ा दी है।

पता हो कि सीआरपीएफ स्कूल में पांच श्रेणी में छात्र–छात्राओं को सिलेक्ट किया जाता है। इसमें सीआरपीएफ अधिकारियों के बच्चे, सीआरपीएफ के रिटायर्ड और हैंडीकैप अधिकारियों के बच्चे, अन्य पैरामिलिट्री फोर्सेस (आईटीबीपी, बीएसएफ आदि) के जवानों के बच्चे पढ़ते हैं। यदि कुछ सीट खाली रहती है तो नानफोरसेज पेरेंट्स के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। दिल्ली सरकार की नाक के नीचे विस्फोट का यह गंभीर मामला है सरकार को गंभीरता से सख्त कदम उठाने चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

संक्षिप्त समाचार

चारनेट विद्यालय द्वारा मतदान जागरूकता के लिए रंगोली सजाकर रैली निकाली

चमकता राजस्थान। जयपुर। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चारनेट के द्वारा देवली उनियारा विधानसभा के उपचुनाव में मतदान को लेकर मतदाताओ को जागरूक करने के लिए देवली उनियारा के निर्वाचन रजिस्ट्रेशन के अधिकारी महोदय के निर्देशानुसार चारनेट कस्बे में रंगोली सजाकर रैली निकाली गई। देवली उनियारा विधानसभा उपचुनाव 2024 में स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत चारनेट क्षेत्र में ग्राम में मतदान जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। यह रैली शाला प्रांगण से प्रारंभ होकर मुख्य बाजार होती हुई दर्रा के बालाजी तक पहुंची जिसमें हाथ में मतदान स्लोगन लिए हुए बच्चे मतदान के नारे लगाते हुए ग्राम वासियों को मतदान जागरूकता का संदेश दे रहे थे। इस मौके पर शाला के कार्मिकों एवं बालकों ने रंगोली सजाकर मतदान की शपथ भी दिलाई गई। इस दौरान ग्राम के गणमान्य नागरिक, शाला प्रधानाचार्य राकेश कुमार मीना, गार्गी पाराशर , पिंकी मीना , मोतीलाल मीना , हंसराज मीना, खेलंता मीना, हेमराज मीणा, तेजमल मीना, रामनिवास मीना,कैलाश धाकड़, आशीष नावरिया, हरीश वर्मा, धनपाल मीना, भंवरलाल गुर्जर सहित अन्य कार्मिक वह विद्यालय के बालक पालिका सहित ग्रामीणों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

दो माह पूर्व लापता हुई बालिका का पता नही लगा पाई पुलिस

- ब्राह्मण समाज ने जिला कलेक्टर के नाम एस डी एम को सौपा ज्ञापन

चमकता राजस्थान। चौमहला /झालावाड। दो माह पूर्व घर से कोचिंग के लिए निकली बालिका लापता हो गई थी जिसकी रिपोर्ट पुलिस थाना गंगधार में दर्ज करवा दी थी जिसका पता दो माह बीत जाने के बाद भी पुलिस नही लगा सकी ?और पुलिस के हाथ खाली है जिस पर आज चौमहला गंगधार के समस्त ब्राह्मण समाज द्वारा जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर लापता बालिका का पता लगाने की गुहार लगाई है , बालिका के पिता कन्हैयालाल शर्मा ने ज्ञापन में बताया कि 21 अगस्त को शाम चार बजे मेरी लड़की वर्षा शर्मा घर से कोचिंग के लिए घर से निकली थी ,जो वापस घर नही लोटी ,जिसकी रिपोर्ट गंगधार थाने में दर्ज करवा दी थी ,लेकिन दो माह बीत जाने के बाद भी पुलिस के हाथ खाली है कोई सुराग नही लगा है ,बालिका के पिता ने बताया कि मैने इस संबंध में सवाई राम पिता वीराराम जाती माली निवासी कुंडला बाड़मेर पर संदेह व्यक्त किया था ,यह लड़का 10 व 11 अप्रैल 2024 को चौमहला के जैन अतिथि गृह में भी रुका था और लापता बालिका के भाई सागर शर्मा से आधा घंटा बातचीत की थी और मोबाइल टेबलेट देने की कोशिश की थी ,तथा काल डिटेल के अनुसार मार्च 2024 में भी वर्षा के मोबाइल पर बात की थी ,उक्त लड़का पिछले एक वर्ष से सोशल मीडिया के माध्यम से वर्षा के संपर्क में था ।

राज बदला , भाजपा काल में बने मौखम विलास पैनोरमा की दशा भी सुधरेगी 6.6 करोड़ की लागत से बनेगी पुलिया

पुनः पैनोरमा पर होगी शहरवासियों की चहल कदमी , मौखमविलास नागरीदास पैनोरमा हेतु पुलिया निर्माण का कार्य शुरू

चमकता राजस्थान / रघुनंदन पारीक श्रीनगर

अजमेर/कीशनगढ। भाजपा सरकार ने ऐतिहासिक गुंदोलाव झील के बीचों बीच स्थित मौखम विलास में गत भाजपा के कार्यकाल में बने संत नागरीदास पैनोरमा को पुनः प्रतिष्ठित करने की दिशा में कार्य शुरू कर दिया है। भाजपा नेता सुभाष चौधरी ने आज भाजपा पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ पैनोरमा तक जाने वाली पुलिया निर्माण की जानकारी ली । सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ मौके पर पुलिया के ड्राईंग, निर्माण कार्य , सुरक्षा मानकों पर चर्चा की। अधिशासी अभियंता रवि बंसल ने बताया कि पुलिया की चौडाई 7.5 मीटर होगी। जिसके दोनो ओर सेफ्टी वाल एवं रेलिंग होगी। पुलिया का वर्क आर्डर जारी कर दिया गया है। एवं कार्य प्रारंभ किया जा रहा है,। 6.6 करोड की लागत

से इस पुलिया का निर्माण कराया जा रहा है। सुभाष चौधरी ने कार्य की गुणवत्ता एवं सुरक्षा को ले कर विशेष ध्यान रखने की बात कही। गौरतलब है कि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी के विधायक कार्यकाल में तत्कालीन धरोहर प्रोन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत एवं भागीरथ चौधरी के प्रयासों से अक्टूबर 2017 में इस पैनोरमा का निर्माण शुरू हुआ ।और सितम्बर 2018 में पैनोरमा का कार्य पूर्ण हो कर लोकार्पण हुआ। तत्कालीन समय में कुल 16 पैनोरमा राजस्थान

भाजपा नेता सुभाष चौधरी और भाजपाईयों ने मौके पर जा कर देखी डीपीआर, सुरक्षा सहित कई मानकों पर हुई चर्चा

में बने जिनमे से 2 पैनोरमा किशनगढ विधानसभा क्षेत्र में निम्बार्काचार्य पैनोरमा सलेमाबाद और नागरीदास पैनोरमा किशनगढ का निर्माण हुआ। किशनगढ के नागरीदास पैनोरमा पर करीब 1.40 करोड की लागत से पैनोरमा के भूतल स्थित बरामदों एवं ऊपर बने कक्षों के जिर्णोद्धार एवं रंग रोगन समेत फर्श निर्माण कर पैनोरमा में 22 थ्री डी फाईबर मूर्ति 4 टू डी फाईबर पैनल और 3 मार्बल की बडी मूर्तियां लगाई गई ।यह किशनगढ के कला जगत के लिए एक बडी उपलब्धि थी ।परन्तु 2018 में सत्ता परिवर्तन के बाद इस पैनोरमा पर ताले लगा दिये गए। और इसके बाद इसकी पुलिया क्षतिग्रस्त हो गई जिसकी विगत 5 सालों में कोई सुध नही ली। असामाजिक तत्वों का पुनः मौखम विलास गढ बन गया । पुनः भाजपा की सरकार आते ही इस पैनोरमा की सुध ली गई । 6.6 करोड की लागत से इस पैनोरमा तक जाने का पुनः रास्ता बनाने की सुध ली गई ।जिससे भाजपाईयों में उत्साह है।

भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने आज मौखमविलास पुलिया का निरीक्षण कर सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों से चर्चा की। और समयबद्ध रूप से इसे पूरा किये जाने और कार्य में तेजी लाने की बात सुभाष चौधरी ने कही।, इनके साथ पूर्व उपसभापति राकेश काकडा , पार्षद शंकर शर्मा, मनीष सोनी सहित भाजपा पदाधिकारियों ने पुलिया निर्माण से पुनः पैनोरमा का संचालन हो पाएगा ।

बिजली कनेक्शन के लम्बित आवेदनों की समीक्षा

समय पर कनेक्शन जारी करवाना अभियन्ताओं की जिम्मेदारी : चेयरमैन डिस्कॉम्स

चमकता राजस्थान

जयपुर, 23 अक्टूबर। चेयरमैन डिस्कॉम्स एवं जयपुर डिस्कॉम की प्रबन्ध निदेशक सुश्री आरती डोगरा ने जयपुर डिस्कॉम के फील्ड अभियन्ताओं को निर्देश प्रदान किए हैं कि नए कनेक्शन के लम्बित आवेदनों का निस्तारण कर उपभोक्ताओं को शीघ्र कनेक्शन जारी किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि आवेदक को समय पर कनेक्षन जारी हो यह डिस्कॉम के फील्ड अभियन्ताओं की जिम्मेदारी है। सुश्री डोगरा ने बुधवार को वीसी के माध्यम से 1 अप्रेल, 2024 से 22 अक्टूबर, 2024 तक प्राप्त हुए आवेदनों के लम्बित कनेक्षनों को लेकर जयपुर डिस्कॉम के अभियन्ताओं के साथ समीक्षा की। उन्होंने इस दौरान न्यू कनेक्शन मैनेजमेन्ट सिस्टम के अनुसार घरेलू, अधरेलू व औद्योगिक श्रेणी के सर्वाधिक लम्बित कनेक्शन वाले सब-डिवीजन कार्यालयों में लम्बित बिजली कनेक्षनों की समीक्षा करते हुए सहायक अभियन्ता और सर्किल अधीक्षण अभियन्ताओं को कनेक्शन शीघ्र जारी करवाने के निर्देष दिए।

सुश्री डोगरा ने कहा कि सभी श्रेणी के कनेक्शन समय पर जारी हो और आवेदन में मामूली कमियों की वजह से किसी आवेदन को रद्ध करने के स्थान पर आवेदक को सूचित कर आवेदन की कमियों की पूर्ति करवाकर कनेक्शन जारी करें। उन्होंने निर्देश दिए कि ई-मित्र के माध्यम प्राप्त होने वाले ऑनलाइन आवेदनों में मोबाईल नम्बर गलत फीड होने या दूसरे सब-डिवीजन में आवेदन करने पर आवेदन को रद्ध करने के स्थान पर सही सब-डिवीजन में भिजवाना सुनिश्चित करें। डिमाण्ड नोट की राशि जमा कराने के प्रकरणों में यह सुनिश्चित करें कि आवेदक को डिमाण्ड नोट की सूचना समय पर मिली या नही। डिमाण्ड नोट जारी होने के बाद निर्धारित समयावधि में आवेदक राशि जमा नही कराता है तो यह सत्यापित करें कि कहीं बिजली का दुरुपयोग तो नही हो रहा है।

चेयरमैन डिस्कॉम्स ने निर्देश दिए कि कनेक्शन के जिन प्रकरणों में अधिशासी अभियन्ता अथवा अधीक्षण अभियन्ता की स्वीकृति आवशयक है ऐसे कनेक्षनों की फाईल को सहायक अभियन्ता द्वारा राजकाज से भिजवाया जाना सुनिश्चित करें। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कनेक्षनों के लिए आवशयक मैटेरियल की पर्याप्त उपलब्धता के लिए एमएम विंग के साथ समन्वय रखें ताकि मैटेरियल की वजह से कनेक्शन जारी करने में देरी नही हो।

बैठक में निदेशक तकनीकी श्री एस.एस.नेहरा, मुख्य लेखा नियंत्रक श्री ए.के. जोशी, जयपुर जोन के मुख्य अभियन्ता श्री आर. के.जीनवाल सहित अन्य वरिष्ठ अभियन्ता मौजूद रहे। भरतपुर व कोटा संभाग के अभियन्ता वीडियो कांफ्रेस के माध्यम से जुड़े।

नसीराबाद उपखंड अधिकारी,यादव ने अवैध खनन पर कसा शिकंजा सरकारी कार्यालय का किया निरीक्षक

चमकता राजस्थान

रघुनंदन पारीक श्रीनगर। अजमेर,/ नसीराबाद उपखंड अधिकारी नसीराबाद देवी लाल यादव ने बुधवार को ग्राम पंचायत न्यारा के सरकारी कार्यालय का निरीक्षण किया वहीं न्या-रा में सरकारी भूमि पर अवैध खनन करते पाए जाने पर मौके से जेसीबी व ट्रैक्टर को जप्त करने की कार्रवाई की । निरीक्षण के दौरान झड़वासा न्यारा मार्ग पर रेलवे अंडरब्रिज के आगे सरकारी भूमि पर अवैध खनन पाये जाने पर मौके से एक जेसीबी एवं एक ट्रैक्टर जब्त कर थाना नसीराबाद सदर के सुपुर्द किया । एवं खनिज विभाग के आला अधिकारियों

आवशयक का कार्रवाही के लिए सुचित किया ।

निरीक्षण के दौरान ग्राम पंचायत कार्यालय,कृषि पर्यवेक्षक कार्यालय, आंगनवाड़ी केन्द्र, राउमावि न्यारा, एवं प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र का निरीक्षण किया। एवं व्यवस्थाओं का जायजा लिया। ग्राम वासियों ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर चिकित्सक का पद रिक्त होने, एवं चिकित्सा अधिकारी बाघसुरी अपूर्वा भारद्वाज के पास राजगढ़ का अतिरिक्त कार्यभार होने की जानकारी दी। चिकित्सा सेवाएं सुलभ कराने के लिए ब्लॉक मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ प्रमोद कुमार श्रीनगर को बाघसुरी चिकित्साधिकारी अपूर्वा भारद्वाज को ग्राम न्यारा में सप्ताह में दो दिवस नियत करने हेतु निर्देशित किया गया।

मंत्रालयिक कर्मचारी संघ के अध्यक्ष चुने गए देशराज यादव

चमकता राजस्थान

शाहपुरा(खलील कुरैशी) । पंचायत समिति शाहपुरा में मंत्रालयिक कर्मचारी की बुधवार को मिटिंग का आयोजन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से कर्मचारियों द्वारा मंत्रालयिक कर्मचारी संघ (मुख्यालय) के मुख्य संरक्षक ,अध्यक्ष,महामंत्री पद पर चुनाव किया गया ।चुनाव प्रभारी संदीप पलसानियाँ ने बताया कि सर्वसम्मति से मुख्य संरक्षक पद पर गुलाबचंद शर्मा अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी,अध्यक्ष पद

पर देशराज यादव,महामंत्री पद पर अनूप सिंह बांगड को चुना गया ।इस मौके पर संदीप पलसानिया वरिष्ठ सहायक, अंकित कुमार जांगिड़ वरिष्ठ सहायक,उमेश यादव कनिष्ठ सहायक,विजय प्रताप सिंह कनिष्ठ सहायक, अजय कुमार बुनकर ने नवनिर्वाचित कर्मचारी संघ पदाधिकारियों का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया।

राजस्थान की बीमार औद्योगिक इकाइयों को पुनर्जीवित करना

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरेशी)। जयपुर औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन का मार्ग राजस्थान में बीमार औद्योगिक इकाइयों का पुनरुद्धार औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने और रोजगार सृजन के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में उभरा है। क्योंकि हम उभरने के लिए तैयार हैं। राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट दिसंबर में होने वाली है। यह मुख्य चुनाव आयुक्त (2018-2021) सुनील अरोड़ा की अध्यक्षता में कट्स इंटरनेशनल द्वारा कार्यान्वित की जा रही राजस्थान रोजगार विनिर्माण निवेश और व्यापार (रेमिट) परियोजना के लिए सलाहकार समिति (पीएसी) के सदस्यों द्वारा व्यक्त विचारों में से एक था। कट्स इंटरनेशनल के महासचिव प्रदीप एस. मेहता ने कहा, पीएसी के विद्वान सदस्यों द्वारा व्यापक विचार व्यक्त किए गए। और इन्हें जल्द ही सरकार के सामने प्रस्तुत किया जाएगा।₹ ₹संपत्तियों को अनलॉक करने से राजस्थान में निवेश परिदृश्य को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी₹।

फ्ग्एटक्ळ परियोजना व्यापार और निवेश पर सहायता प्रदान करने के लिए राजस्थान सरकार के साथ कट्स की एक साझेदारी है। विशेष रूप से विदेशी देशों से जहां भारत का मुक्त व्यापार समझौता है। पीएसी में लगभग 20 सदस्य हैं। जिनमें राव राजेंद्र सिंह, सांसद; अजिताभ शर्मा, प्रमुख सचिव, उद्योग; सुनील भार्गव, सीए और नीति प्रभारी, भाजपा, राजस्थान; गोपाल के.अग्रवाल, आर्थिक प्रवक्ता, भाजपा भारत, पूर्व सिविल सेवकः रुक्मणि हल्दिया और सिद्धार्थ; अन्य गणमान्य व्यक्तियों में अनिल खेतान, सौरभ कक्कड़, महावीर शर्मा, गौरव रूंगटा शामिल थे। अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में, अरोड़ा ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत भिवाड़ी बेल्ट राज्य के लिए सोने की खान है। जिसे पोषित करने और इसे और मजबूत करने की आवशयकता है। जापानी औद्योगिक क्षेत्र पहले से ही वहां मौजूद हैं। और भविष्य में दक्षिण कोरियाई और स्विस क्षेत्रों की योजना बनाई जा रही है। नए निवेश को आकर्षित करने के मामले में इस प्रयास का केंद्र दिल्ली- मुंबई औद्योगिक गलियारे (डीएमआईसी) के भीतर राजस्थान की लाभप्रद स्थिति है। डीएमआईसी राज्य के लगभग 39% हिस्से को कवर करता है, जो खुशखेड़ा- भिवाड़ी- नीमराना और जोधपुर- पाली- मारवाड़ जैसे कई औद्योगिक क्षेत्रों की पेशकश करता है। ये गलियारे उच्च गति माल ढुलाई लाइनों, उन्नत बुनियादी ढांचे और औद्योगिक विकास परियोजनाओं के माध्यम से औद्योगिक इकाइयों को प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त प्रदान करने के लिए तैयार हैं। इन गलियारों के रणनीतिक लाभों का लाभ उठाकर, राजस्थान घरेलू और विदेशी निवेश दोनों को आकर्षित कर सकता है, जिससे आर्थिक विकास और रोजगार बढ़ सकता है।

पीएसी बैठक के दौरान चर्चा का एक प्रमुख बिंदु जोधपुर- पाली औद्योगिक गलियारा था, जिसे क्षेत्र में औद्योगिक विस्तार के लिए एक संकेत के रूप में देखा जाता है। अपने तेजी से बढ़ते रियल एस्टेट सेक्टर, फलते- फूलते लघु उद्योगों और फलते- फूलते हस्तशिल्प बाजार के साथ, गलियारा राजस्थान के आर्थिक विकास का एक प्रमुख चालक बनने के लिए तैयार है। क्षेत्र में तेल रिफाइनरी परियोजना ने पहले से ही महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों को जन्म दिया है, और गलियारे के विकास से विशेष औद्योगिक क्लस्टर बनाकर स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को और बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। औषधीय पौधों, मसालों और ताजी सब्जियों जैसे क्षेत्रों में बाजार संपर्क की संभावना को भी एक प्रमुख अवसर के रूप में पहचाना गया। पुणे जैसे सफल मॉडलों से सबक लेते हुए, इस क्षेत्र का फोकस समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए, विशेष रूप से गांवों में महिलाओं के लिए लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल होगा।

इस विकास से ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने और रोजगार पैदा करने की उम्मीद है, जिससे जोधपुर-पाली कॉरिडोर राजस्थान की औद्योगिक विकास रणनीति में एक महत्वपूर्ण दल बन जाएगा। पर्यटन, जो राजस्थान की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था की आधारशिला है, को विकास की अपार संभावनाओं वाली सोने की खान के रूप में रेखांकित किया गया। राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखती है। समिति ने उत्तर प्रदेश के राम मंदिर और वाराणसी पर्यटन जैसे सफल मॉडलों से प्रेरणा लेकर विरासत पर्यटन को बढ़ाने के लिए रणनीतियों की खोज की। नाथद्वारा, पुष्कर और कृष्णा सर्कल जैसे प्रमुख क्षेत्रों के आसपास सांस्कृतिक पर्यटन समूहों की स्थापना के साथ- साथ स्थानीय हस्तशिल्प, आभूषण और कृषि- पर्यटन को बढ़ावा देने से पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के बीच महत्वपूर्ण तालमेल बन सकता है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय हित, विशेष रूप से दक्षिण कोरियाई निवेशकों से, विरासत पर्यटन और संबंधित उद्योगों के विकास का समर्थन करने के लिए पूंजी और विशेषज्ञता लाकर इस क्षेत्र को बढ़ावा दे सकता है। यह सुनिश्चित करके कि सभी हितधारक एक ही पृष्ठ पर हैं, राजस्थान एक अधिक निवेश और व्यापार- अनुकूल वातावरण बना सकता है जो निवेश को आकर्षित करता है, एमएसएमई का समर्थन करता है और औद्योगिक पाक- ों के विकास की सुविधा प्रदान करता है।औद्योगिक विकास के लिए एक सक्षम वातावरण को बढ़ावा देने के लिए यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। बुनियादी ढांचे में सुधार, ऋ्रष्टा तक पहुंच प्रदान करना और विशेष रूप से एमएसएमई के लिए क्षमता निर्माण के सरकार के प्रयास राजस्थान की आर्थिक गति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण होंगे। निवेश- अनुकूल नीतियां बनाने, क्लस्टर विकास और आधुनिकीकरण समर्थन पर राज्य का ध्यान यह सुनिश्चित करेगा कि अर्थव्यवस्था न केवल पुनर्जीवित हो बल्कि व्यापकऔद्योगिक ढांचे में एकीकृत हो, जो दीर्घकालिक आर्थिक लचीलेपन और रोजगार में योगदान दे। फ्ग्एटक्ळ परियोजना के लिए परियोजना सलाहकार समिति की उद्घाटन बैठक ने राजस्थान के आर्थिक भविष्य के लिए एक स्पष्ट और आशावादी एजेंडा तय किया।

संक्षिप्त समाचार

बिजली इंटर डिस्कॉम ने विभिन्न मांगों को लेकर बीजेपी मंत्री जोगाराम को सौंपा ज्ञापन

चमकता राजस्थान। भरतपुर/जोधपुर, (राजवीर सिंह)। केबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल को उनके जोधपुर दौरे के दौरान इंटर डिस्कॉम की मांग को लेकर एक ज्ञापन सौंपा गया। इस ज्ञापन में इंटर डिस्कॉम की आवशयकता और इसके महत्व पर जोर दिया गया है। साथ ही पुर्व में मंत्री महोदय के द्वारा सीनियारिटी को लेकर दिए गए बयान पर भी विस्तार से चर्चा की गई जिस पर मंत्री महोदय भी आस्वस्त नजर आए।

इस अवसर पर केबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि सरकार इंटर डिस्कॉम की मांग पर विचार करेगी और जल्द ही इस पर निर्णय लिया जाएगा। उन्होंने ज्ञापन को स्वीकार करते हुए कहा कि सरकार हमेशा जनता की मांगों को पूरा करने के लिए तैयार है।

₹हम इंटर डिस्कॉम की मांग पर विचार करेंगे और जल्द ही इस पर निर्णय लिया जाएगा। हम हमेशा जनता की मांगों को पूरा करने के लिए तैयार हैं।₹ - केबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल

इस अवसर पर समिति के प्रदेशाध्यक्ष रामकेश मीणा के साथ समिति के कार्यकताओं में से वीर सिंह जाटव, मुकेश ,रवि देलवाल, बलराम मीना, शिवलहरि, रामराज, विक्रम, हेमन्त राठौड़, पुखराज पटेल, मोहनसिंह, शंकरदयाल सुरेश विश्नोई, मुन्नालाल, अमरसिंह आदि भी उपस्थित रहे

घर बैठे 10 लाख तक का लोन ले सकते हैं: पंजाब नेशनल बैंक ग्राहक मिलन समारोह

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण) पंजाब नेशनल बैंक शाखा बाड़ी द्वारा ग्राहक मिलन सम्मान समारोह का आयोजन निजी मैरिज होम शम्भू रिसोर्ट बाड़ी में हरिमोहन मीणा उप मंडल प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, नरेश वर्मा शाखा प्रबंधक, संत कुमार मुख्य प्रबंधक, गोपाल दास, मुकेश नोनेरा, मुन्नालाल मंगल आदि मंच पर विराजमान अतिथियों का गुलदस्ता भेंटकर स्वागत सम्मान किया गया। आज के कार्यक्रम में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से आये सभी खाताधारकों का मंच से स्वागत सम्मान किया गया! हरिमोहन मीणा उप मंडल प्रबंधक द्वारा खाता धारकों के हित में विस्तार से प्रकाश डाला। हमारे पंजाब नेशनल बैंक में छोटे - छोटे से अमाउंट को लेकर खाता चालू कर सकते हैं। हमारे यहां से सभी गवर्नमेंट की स्कीमो का फायदा भी ले सकते हैं। हमारे यहां बिजनेस लोन 10 लाख तक घर बैठे ले सकते हैं। केवल आपको कागज समिट करने पड़ेंगे, हमारी पीएनबी बैंक ने 26000 करोड़ का बिजनेस पार किया है, डिजिटल हाउसिंग लोन भी हम देते हैं, कर लोन भी हम तुरंत प्रभाव से करते हैं, इंडस्ट्रीज लोन भी देते हैं, आदि ग्राहकों से संबंधित विस्तार से चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम में बी सी की अहम भूमिका रही। नवीन कुमार गोयल, रमन गर्ग, चेतन मीना, मनीष गौड़, बैंक कर्मचारी मौजूद रहे ' इस कार्यक्रम के मौके पर ठाकुरदास, राजीव कुमार, मनोज कुमार, परसोत्तम, अरुण कुमार एडवोकेट, राकेश कुमार, गजानंद शर्मा, रामदास तरुण, मलिक इमरान, रोहित वर्मा, आदि मौजूद रहे। आज के कार्यक्रम का मंच संचालन जिनेश शाखा प्रबंधक बाड़ी द्वारा किया गया!

वार्ड नंबर 13 ,वार्डवासी मूलभूत सुविधाओं से वंचित

- दो पंचायतो की सीमा में बसने का उठा रहे खामियाजा

चमकता राजस्थान /रमेश मोदी। चौमहला /झालावाड। ग्राम पंचायत कोलवी उर्फ मंडी राजेन्द्र पुर (चौमहला) के वार्ड नंबर 13 व शनि मंदिर के पासपास के निवासी वर्षों से बिजली, पानी ,सफाई जैसी मूलभूत सुविधाओं के नही मिलने से परेशान है ग्राम पंचायत पर अनदेखी का आरोप लगाते हुवे जिला कलेक्टर के नाम उपखंड अधिकारी दिनेश कुमार मीणा को ज्ञापन सौपा ,। दीपावली का त्योहार नजदीक आ रहा है ,इस पर भी इन्हें सफाई ,पेयजल ,रोशनी के लिए तरसना पड़ रहा है ,कहने को इस क्षेत्र के निवासी ग्राम पंचायत के वार्ड नम्बर 13 के निवासी है जो चौमहला सरपंच चुनाव में वोट करते है लेकिन खेद का विषय है जानकारी के अनुसार उपरोक्त समस्याओं के बारे में पंचायत ने दो टूक गैर जिम्मेदाराना जवाब दे रखा है कि आप हमारी पंचायत क्षेत्र में नही आते हो ,तलावली पंचायत में आते हो ,जबकी तलावली ग्राम पंचायत सरपंच सुरेश सिंह का कहना है कि इस क्षेत्र के निवासी तलावली पंचायत की राजस्व सीमा में आते है लेकिन यह चौमहला पंचायत के वोटर है रोशनी व बिजली व्यवस्था चौमहला पंचायत ने कर रखी है तलावली पंचायत द्वारा वहाँ सीमेंट के गुट्टे लगाकर सड़क बनवा दी है नल लगवा दिए , दो पंचायतो के बीच यहाँ के निवासी ला वारिस हो गए ,जिससे परेशान होकर इस वार्ड की महिलाओं ने उपखंड अधिकारी को जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन सोप कर उक्त समस्याओं को शीघ्र हल करवाने की मांग की है ।

आवासन आयुक्त ने ली समीक्षा बैठक

आवासन मंडल की परियोजनाओं में दीपोत्सव पर स्ट्रीट लाइटिंग की समुचित व्यवस्था हो सुनिश्चितः आवासन आयुक्त

सड़क, पानी एवं बिजली की व्यवस्थायें तुरन्त की जाये दुरस्त

चमकता राजस्थान

जयपुर, 23 अक्टूबर। दीपोत्सव के अवसर पर प्रदेश भर में जारी आवासन मंडल की समस्त परियोजनाओं में स्ट्रीट लाइटिंग की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। यह कहना है आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा का।

डॉ. रश्मि शर्मा ने यह बात बुधवार को आवासन मंडल मुख्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए कही। साथ ही उन्होंने कहा कि मण्डल प्रदेश के सभी अंचलों में आमजन को आवास देने के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। उन्होनें कहा है कि परियोजनाओं का निर्माण कार्य शुरु होने से पहले ही सड़क, पानी, बिजली सहित अन्य व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने की प्रभावी कार्य योजना बनाई जायें। उन्होनें सख्त निर्देश दिये कि अधिकारी/अभियन्ता विकास कार्यो में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का उपयोग सुनिश्चित करें। साथ ही टेस्टिग लैब में खुद अपने समक्ष सेम्पलस की जांच करवाये। उन्होनें कहा कि निर्माण से आवंटन होने तक प्रत्येक प्रोजेक्ट में संवेदनशीलता से कार्य किया जाये।

डॉ. शर्मा ने उपयुक्त जमीनों को शीघ्र अवाप्त करने के निर्देश दिए ताकि मण्डल की आवासीय योजनाओं से सभी आमजन लाभान्वित हो सके। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसी संस्थागत संपत्तियों का चिन्हीकरण किया जाये जहाँ आवंटन पश्चात तय समय सीमा के अंदर निर्माण नहीं हुआ है, ऐसी संपत्तियों के निरस्तीकरण की प्रक्रिया तत्काल आरंभ की जाये।

असीम आर्थिक संभावनाओं से लबरेज कोचिंग हब है देश का पहला अनूठा नवाचार : आवासन आयुक्त

जयपुर के प्रताप नगर में बने वर्ल्ड क्लास कोचिंग हब के विकास कार्यों की मंडल आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा लगातार सघन मॉनिटरिंग कर रही हैं। साथ ही कोचिंग संचालकों की ओर से आए सुझावों पर भी तीव्र गति से काम किया जा रहा है। आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने बुधवार को हुई बैठक में कोचिंग हब के विकास कार्यों की समीक्षा भी की। जिसमें कोचिंग संचालकों के साथ बैठक में आए सुझावों पर अब तक हुए काम को लेकर समीक्षा की गई। साथ ही कोचिंग हब में आवंटियों और कोचिंग संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ जल्द इंटरेक्शन मीट आयोजित करने के निर्देश दिए । इसी क्रम में आयुक्त ने अधिकारियों को सभी काम समय पर पूरा करने का टारगेट दिया।उन्होंने कहा की इस प्रोजेक्ट को बेहतर से और बेहतर बनाना मण्डल की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अभियंता पूर्ण समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ आवासों का निर्माण करें। वे निर्मित आवासों के विक्रय का लक्ष्य अविलम्ब प्राप्त कर आमजन को गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराएं।

डॉ. शर्मा ने मण्डल की आवासीय योजनाओं का प्रदेशभर में विस्तार करने के उद्देशय से जिलों में भूमि चिन्हित एवं अवाप्त करने के प्रस्ताव मुख्यालय प्रेषित करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि अभियंता फील्ड में जाकर स्थानीय प्रशासन के सहयोग से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जमीनों के प्रस्ताव तैयार करें। साथ ही, प्रीमियम प्रॉपर्टी के प्रस्ताव भी अविलम्ब तैयार किए जाए।

साथ ही उन्होंने खाली मकानों के शीघ्र ऑक्शन करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने नवीन आवासीय योजनाओं के संबध में विस्तृत दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि अभियंता जमीन को अवाप्त करने से पहले कोस्ट बेनेफिट अध्ययन सुनिश्चित करें। डॉ. शर्मा ने कहा कि मण्डल भूमि हस्तांतरण की एसओपी बनाकर लंबित प्रकरणों का तत्काल निस्तारण करें । बैठक में मुख्य अभियंता मुख्यालय श्री डी.एस. मीना ,मुख्य अभियंता-प्रथम श्री अमित अग्रवाल , मुख्य संपदा प्रबंधक श्री प्रवीण अग्रवाल, मुख्य नगर नियोजक श्री अनिल माथुर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं अभियंता उपस्थित रहे।

जेडीए द्वारा आमजन को प्रदान की जाने वाली ऑनलाईन सेवाओं हेतु निर्धारित मानक प्रक्रिया (एसओपी) पर पावर पोईन्ट प्रेजेंटेशन

समस्त जोन उपायुक्तों एवं जोन में पदस्थापित अधिकारी/कर्मचारियों को पीपीटी के माध्यम से दी गई विस्तृत जानकारी

चमकता राजस्थान

जयपुर, (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। जयपुर विकास आयुक्त आनंदी के निर्देषों पर नागरिक सेवा केन्द्र के माध्यम से जविप्रा के ऑनलाईन पोर्टल पर आमजन को प्रदान की जाने वाली सेवाओं हेतु निर्धारित नवीन मानक प्रक्रिया (एसओपी) का पावर पोईन्ट प्रेजेंटेशन के माध्यम से संयुक्त आयुक्त (सिस्टम मैनेजमेंट) द्वारा अतिरिक्त आयुक्त एलपीसी एस.पी. सिंह की उपस्थिति में बुधवार को दो पारियों (प्रातः एवं सायं) में समस्त जोन उपायुक्तों एवं जोन में पदस्थापित अधिकारी/कर्मचारियों को विस्तृत जानकारी दी गई। जेडीसी ने बताया कि नागरिक सेवा केन्द्र के माध्यम से जविप्रा के ऑनलाईन पोर्टल पर नागरिकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं (यथा लीजहोल्ड, नाम हस्तान्तरण, लीज मुक्ति प्रमाण पत्र तथा उप विभाजन/पुनर्गठन) के संबंध में समय-समय पर जारी कार्यालय आदेशों में प्रदत्त व्यवस्था में समयानुरूप आंशिक संशोधन करते हुए एवं नवसृजित सेवा फ्री-होल्ड व लीज होल्ड से फी-होल्ड पट्टा के कार्य सम्पादन हेतु नवीन मानक प्रक्रिया (एसओपी) गत दिनों निर्धारित की गई थी, जिसकी पालना जोन उपायुक्त एवं जोन में पदस्थापित अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा सुनिश्चित किये जाने हेतु पॉवर पोईन्ट प्रेजेन्टेशन का आयोजन किया गया है।सभी अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा आदेश में निर्धारित मानक प्रक्रिया मानक प्रक्रिया (एसओपी) समयसीमा व क्रम की पालना अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करते हुए कार्य निष्पादन किया जावेगा तथा उपायुक्त / संबंधित अतिरिक्त आयुक्त द्वारा नियमित समीक्षा की जायेगी।यदि किसी अधिकारी/कर्मचारी द्वारा निर्धारित कार्य प्रणाली व समयावधि में कार्यवाही नहीं की जाती है, तो पत्रावली उपायुक्त की प्व में स्वतः अग्रेषण (auto forward) की व्यवस्था प्रारम्भ की जायेगी। प्रायोगिक रूप से सर्वप्रथम उक्त प्रक्रिया नाम हस्तान्तरण की सेवा के प्रकरणों में लागू की जावेगी एवं तत्पश्चात क्रमिक रूप से अन्य सभी ऑनलाईन सेवाओं में लागू किया जायेगा। इस व्यवस्था से संबंधित जोन उपायुक्त द्वा-रा संबंधित अधिकारी-कर्मचारी कर्मचारी को अपेक्षित कार्यवाही हेतु निर्देशित किया जाकर निर्धारित समयावधि में निस्तारण सुनिश्चित हो सकेगा।

विभिन्न प्रतिष्ठानों से लिए घी व मिठाईयों के नमूने

- शुद्ध आहार मिलावट पर वार के तहत खाद्य सुरक्षा विभाग ने करी कार्रवाई

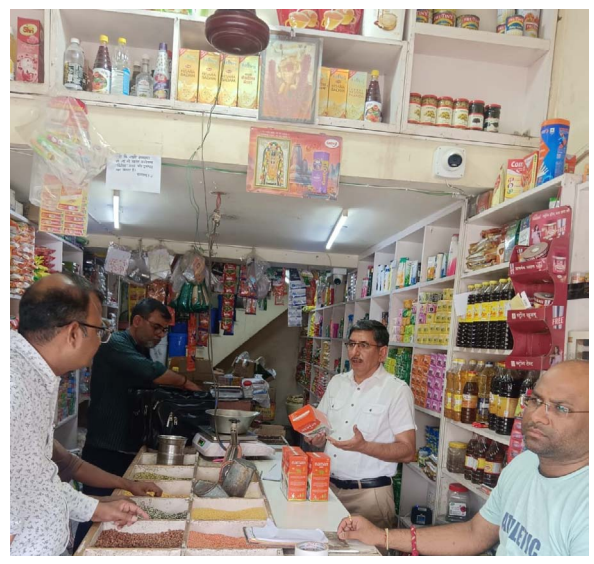

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी) जयपुर प्रथम। 23 अक्टूबर। डॉ जितेंद्र कुमार सोनी (जयपुर जिला कलेक्टर) के द्वारा गठित खाद्य सुरक्षा टीम द्वारा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जयपुर प्रथम डॉ. विजय सिंह फौजदार के निर्देशन मे बुधवार को खाद्य सुरक्षा दल द्वारा शयाम ट्रेडर्स हसनपुरा के यहां से घी, रिलायंस रिटेल के यहां से मिठाई, बीकानेर स्वीट्स हसनपुरा के यहां से मावा मिठाई, खंडेलवाल मिष्ठान भंडार हसनपुरा के यहां से तेल एवं छेना मिठाई, श्री शयाम पनीर एंड स्वीट्स विद्याधर नगर के यहां से मावा एवं मिठाई के खाद्य नमूने जांच हेतु लिये।इस दौरान दुकानदारों को दीपावली के दौरान दुकान में साफ सफाई रखने के लिये विशेष ध्यान रखने के दिशा निर्देश दिये गये। साथ ही मिठाईयों में स्वयं द्वारा उच्च गुणवत्ता युक्त दूध से निर्मित मावे का ही उपयोग करने के लिये निर्देश प्रदान किये गये। सभी प्रतिष्ठानों को रसोई, बर्तन, फर्श, दीवारें, काउंटर आदि साफ रखने, खाद्य सामग्री को ढककर रखने के लिए पाबंद किया गया।

लिये गये खाद्य नमूनों को जांच हेतु खाद्य प्रयोगशाला जयपुर में जांच हेतु भिजवाया गया है जांच रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के प्रावधान अनुसार अग्रिम कार्यवाही की जाएगी।

सुरक्षा सखी संवाद पखवाड़ा सम्पन्न

मुख्यमंत्री के निर्देश पर पुलिस मुख्यालय की महिला सुरक्षा के प्रति जागरूकता की विशेष पहल

पखवाड़े में 3 लाख 51 हजार से अधिक महिलाओं-बालिकाओं को बनाया सजग

चमकता राजस्थान

आयपुर! (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। राज्य सरकार के निर्देश पर प्रदेश में 5 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक संचालित 'सुरक्षा सखी संवाद पखवाड़े' में पुलिस थानों से जुड़ी सैकड़ों सुरक्षा सखियों द्वारा चलाई गई विशेष मुहिम में 3 लाख 51 हजार से अधिक महिलाओं और बालिकाओं को घर-घर जाकर महिला सुरक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूकता किया गया है। यह कैंपेन प्रदेश के एक हजार से अधिक पुलिस थानों के स्तर सक्रिय सुरक्षा सखियों द्वारा घर-घर चलाई गई। अभियान में सुरक्षा सखियों ने गांव-गुवाड़, नुक्कड़-मौहल्लों और प्रमुख स्थानों पर महिलाओं और बालिकाओं से संवाद स्थापित कर उन्हें महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया

अतिरिक्त महानिदेशक, पुलिस (एडीजी) सिविल राइट्स एवं एएचटी मालिनी अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने गत दिनों में गृह विभाग की समीक्षा बैठक में प्रदेश में महिला सुरक्षा के प्रति विशेष जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश प्रदान किए थे। इसकी पालना में पुलिस मुख्यालय की मॉनिटरिंग में महिलाओं और बालिकाओं में स्वयं की सुरक्षा के प्रति जागरूकता तथा उन्हें सुरक्षित वातावरण प्रदान करने के उद्देशय से यह अभियान सभी जिलों में

राज्य में 1000 से अधिक थानों की सक्रिय सुरक्षा सखियों ने घर-घर चलाई मुहिम

संचालित किया गया। उन्होंने बताया कि 'सुरक्षा सखी पखवाड़े' में प्रदेश के सभी थानों से जुड़ी सक्रिय सुरक्षा सखियों के माध्यम से 2 लाख 36 हजार से अधिक बालिकाओं और एक लाख 15 हजार से ज्यादा महिलाओं को जागरूक किया गया।

सुरक्षा सखियों ने घर-घर किया सम्पक एडीजी अग्रवाल ने बताया कि प्रदेश में पुलिस आयुक्त, रेंज महानिरीक्षक, जिला पुलिस अधीक्षक और पुलिस उपायुक्तों की देखरेख में थानों के स्तर पर नियुक्त नोडल अधिकारियों के पर्यवेक्षण में 'सुरक्षा सखियों द्वारा घर-घर जाकर महिलाओं और बालिकाओं से सम्पर्क करते हुए उन्हें महिला सुरक्षा से सम्बंधित कानूनों के बारे में जानकारी दी गई। वहीं सार्वजनिक स्थानों पर महिला समूहों से संवाद कर उनकों जागरूक किया गया। इस दौरान महिलाओं और बालिकाओं से प्राप्त फीडबैक और सुझावों से सम्बंधित थानों को अवगत कराया जाएगा। रेंज स्तर पर होगा 'सुरक्षा सखियों' का सम्मान एडीजी ने बताया कि प्रदेश में पुलिस आयुक्त, रेंज महानिरीक्षक, जिला पुलिस अधीक्षक और पुलिस उपायुक्त को अभियान में सराहनीय कार्य करने वाली सुरक्षा सखियों आगामी दिनों में रेंज स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

फिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0 अभियान के तहत 25 अक्टूबर को होगा दौड़ का आयोजन

- **सिटी पार्क, मानसरोवर में प्रातः 6:30 बजे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य थीम पर होगा आयोजन**

चमकता राजस्थान। जयपुर! (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। जिला प्रशासन द्वारा शुक्रवार, 25 अक्टूबर 2024 को जयपुर के मानसरोवर स्थित सिटी पार्क में प्रातः 6:30 बजे फिट इंडिया फ्रीडम रन 5.0 अभियान के तहत दौड़ का आयोजन किया जाएगा।जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री प्रतिभा वर्मा ने बताया कि स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की थीम पर आयोजित होने वाली फिट इंडिया फ्रीडम रन में स्कूल एवं कॉलेज केविद्यार्थी,जनप्रतिनिधि, गणमान्य व्यक्ति, खिलाडी, राजकीय कर्मचारी, महिलाएं,एनजीओ, ट्रस्ट, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाएँ, व्यापारी, स्थानीय नागरिक, प्रबुद्ध जन, एनसीसी, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं स्काउट्स के स्वयंसेवक अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएंगे। जिला परिषद के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी शेर सिंह लुहाड़िया ने रन के विजेताओं को आयोजन में सम्मानित भी किया जाएगा। जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को जिम्मेदारियां सौंपी है।

लेट का बास में आंगनबाड़ी भवन का किया गया भूमि पूजन

चमकता राजस्थान। शाहपुरा (खलील कुरैशी) ग्राम पंचायतः लेट का बास (जिला जयपुर , तहसीलः शाहपुरा) के ग्राम लाखनी के सरकारी विद्यालय परिसर में आंगनवाड़ी भवन के भूमि पूजन का समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (क्हउछ) के महाप्रबंधक चाकसू त्रिभुवन कुमार, उप महापबंधक सांगानेर इरफान अली, विद्यालय के प्रधानाचार्य, सरपंच, ग्रामीण वासी एवं क्हउछ के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया। यह भवन निर्माण क्हउछ की कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलि (उरफ) योजना के तहत किया जा रहा है, जो समुदाय के कल्याण के लिए विभिन्न परियोजनाओं का कार्यनवंह करती हैं। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन ने हमेशा सामाजिक उत्थान के लिए कदम उठाए हैं, और इस परियोजना के माध्यम से वे ग्रामीण बच्चो को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए हमेशा अग्रणी रहे हैं। प्रधानाचार्य एवं सरपंच ने इस पहल की सराहना की और उम्मीद जताई कि इसने ग्रामीण बच्चो को शिक्षा के साथ साथ अन्य आवशयक सेवाए भी मिलेगी। इस भूमि पूजन के साथ लेट का बास ग्राम पंचायत में शिक्षा और विकास की नई राहें खुलेगी।

सपेरा, नाथ, असहाय, समुदाय के लोगों के बीच मनाया बच्ची का जन्मदिन

चमकता राजस्थान। धौलपुर(रामदास तरुण) । आज बाड़ी उपखंड में सपेरा, नाथ, असहाय, समुदाय के लोगों के बीच रविश सिरोहा ने अपनी पुत्री नव्या सिंह सिरोहा का जन्मदिन मनाया, बच्ची के जन्मदिन पर कच्ची बस्तियों में जाकर विकलांग, असहाय, अनाथ, समुदाय के लोगों के बीच में बिटिया निव्या के द्वारा उन परिवारों के बच्चों को मिष्ठान वितरण किया व जन्मदिन मनाने की नई पहल की शुरुआत की, उन्होंने कहा कि इस साल की भांति में कोशिश किया करूंगा कि प्रतिवर्ष गरीब असहाय लोगों की सहायता कर अपनी बिटिया का इसी तरह बर्थडे बनाऊं, जिसे उसे खुशी के साथ-साथ एक उज्जवल भविष्य हेतु लोगों से आशीर्वाद भी मिलेगा। इस मौके पर पत्रकार रामदास तरुण व राकेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

असम प्रवास के दूसरे दिन निरीक्षण करके चिकित्सा सुविधाओं का लिया जायजा,

असम के लोगों से संवाद में बोले भागीरथ चौधरी - बेहतर शिक्षा, चिकित्सा व रोजगार को लेकर प्रतिबद्ध है सरकार

केंद्रीय मंत्री ने विभिन्न केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर किया संवाद

चमकता राजस्थान

जयपुर/तिनसुकिया (खलील कुरैशी) (असम), 23 अक्टूबर 2024 केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने आज असम प्रवास के दूसरे दिन तिनसुकिया जिला मुख्यालय स्थित मेडिकल कॉलेज और अस्पताल पहुँचकर अधिकारियों के साथ बैठक की और अस्पताल की चिकित्सा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने अस्पताल में केंद्र सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन के बारे में चर्चा की और मरीजों से संवाद करके उनकी कुशलक्षेम

जानी।

अस्पताल में मिल रही सुविधाओं का लिया जायजा और दिए आवशयक दिशा-निर्देश : तिनसुकिया जिला अस्पताल में निरीक्षण के उपरांत केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि मुझे खुशी है कि यह अस्पताल मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। साथ ही इस दौरान केंद्रीय मंत्री चौधरी ने खाद्य सामग्री की दुकान पर पहुँचकर आमजन से बात करते हुए उन्हें दी जा रही खाद्य सामग्री की गुणवत्ता को जाना। आमजन से संवाद के दौरान केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार देश के आमजन को बेहतर, शिक्षा, चिकित्सा एवं रोजगार को लेकर प्रतिबद्ध है तथा अपनी कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने को लेकर हरसंभव प्रयासरत है।

विभिन्न वर्गों से मुलाकात कर केंद्रीय योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर किया संवाद : इसके बाद केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने तिनसुकिया में चाय फेक्ट्री का निरीक्षण कर वहां काम कर रहे श्रमिकों से संवाद किया तथा पास में ही विद्यालय में चल रही गतिविधियों व व्यवस्थाओं की जानकारी लेकर विद्यार्थियों से मुलाकात की एवं यहां मौजूद प्रवासी राजस्थानी लोगों से संवाद किया। साथ ही केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने यहां के स्थानीय जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं सहित 'मोरान स्वायतशासी परिषद, व्यापार संघ, समाज के विभिन्न वर्ग के प्रतिनिधियों से संवाद करके उनकी समस्याएं सुनी तथा केंद्रीय योजनाओं के परिलाभों के संबंध में विस्तार से चर्चा की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने स्व. भैरोंसिंह शेखावत की 101वीं जयन्ती पर पुष्पांजलि अर्पित की

चमकता राजस्थान

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को पूर्व उपराष्ट्रपति एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. भैरोंसिंह शेखावत के स्मृति स्थल पहुंचे। शर्मा ने स्व. शेखावत की 101वीं जयन्ती पर विद्याधर नगर स्थित स्मृति स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने स्व. शेखावत के परिजनों से मुलाकात की तथा प्रार्थना सभा में शामिल हुए।

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि स्व. भैरोंसिंह का सम्पूर्ण जीवन जनकल्याण के लिए समर्पित रहा। उनके विचार और आदर्श

हमें हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। इस दौरान उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़, शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, राज्यसभा सांसद मदन राठौड़, विधायक गोपाल शर्मा सहित गणमान्य उपस्थित रहे।

दिया कुमारी ने राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत की जयंती पर उनकी समाधि स्थल पर की पुष्पांजलि अर्पित !

चमकता राजस्थान। जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने राजस्थान की राजनीति के पुरोधा, देश के पूर्व उपराष्ट्रपति, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत की जन्म जयंती पर विद्याधर नगर स्थित उनकी समाधि स्थल पर पुष्पांजलि कर आदरणीय 'बाबोसा' को नमन किया।

राज्यपाल बागडे ने स्व. शेखावत को पुष्पांजलि अर्पित की

कहा, शुचिता से जुड़े स्व. शेखावत गरीबों और वंचित तबके के लिए कार्य करने वाले लोकप्रिय जन नेता थे

चमकता राजस्थान।

जयपुर, !(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने बुधवार को उपराष्ट्रपति एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे स्व. भैरोंसिंह शेखावत की जयंती पर विद्याधर नगर स्थित उनके स्मृति स्थल पर पहुंचकर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।उन्होंने स्व. शेखावत के व्यक्तित्व को अनुकरणीय बताया। बाद में उन्होंने कहा कि राजनीति में शुचिता से जुड़े स्व. शेखावत गरीबों और वंचित तबके के लिए निरंतर कार्य करने वाले लोकप्रिय जन नेता थे।

हेरिटेज निगम सफाई मित्रों को दिया सीवर हॉल की सफाई करने का प्रशिक्षण

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। नगर निगम हेरिटेज में बुधवार को सीवर टैंक और लाइन की सफाई के संबंध में सफाई मित्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस संबंध में हेरिटेज निगम के उपायुक्त स्वास्थ्य संदीप दाधीच ने बताया कि निगम आयुक्त अरुण कुमार हसीजा के निर्देश पर हेरिटेज निगम मुख्यालय सभागार में सफाई मित्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। निगम की आईईसी एक्टिविटी टीम के सत्येंद्र सिंह और राघव गुप्ता ने सभी सफाई मित्रों को बताया कि सीवर हॉल के जाम होने पर वे सभी सुरक्षित रूप से सीवर की सफाई कार्य करें। मेन हॉल में तकनीकी मशीन से ही करें। साथ ही जरूरी हो तो पीपीई किट पहन कर ही सीवर हॉल में उतरे। बिना सुरक्षा उपकरण और पीपीई किट पहन कर उतरना कानूनी अपराध भी है। ऐसा करने पर सजा का प्रावधान भी है। प्रशिक्षण के दौरान सफाई उपकरणों के बारे में भी जानकारी दी गई। साथ ही बताया गया कि सीवर या सेप्टिक टैंक की सफाई के लिए हेल्प लाइन नंबर 14420 भी उपलब्ध कराया गया है। इस दौरान सफाई मित्रों को पीपीई किट पहनना भी सिखाया गया। प्रशिक्षण में अतिरिक्त आयुक्त सुरेंद्र सिंह यादव, उपायुक्त गैराज अनीता मित्तल और स्वच्छता सर्वेक्षण उपायुक्त सरिता मल्होत्रा भी मौजूद रही।

जलदाय मंत्री के अथक प्रयासों से पृथ्वीराज नगर पेयजल परियोजना एवं डिग्गी मालपुरा रोड़ से टोंक रोड़ के मध्य क्षेत्र के निवासियों को मिली बड़ी राहत

विगत तीन माह में 18 हजार से अधिक नवीन जल कनेक्शन किए जारी

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैया लाल चौधरी के अथक प्रयासों से जलदाय विभाग द्वारा पृथ्वीराजनगर पेयजल परियोजना एवं डिग्गी मालपुरा रोड़ से टोंक रोड़ के मध्य क्षेत्र के निवासियों को अगस्त माह तक 6 हजार 686 एवं अक्टूबर माह तक 11 हजार 455 नवीन पेयजल कनेक्शन उपलब्ध करवाकर बड़ी राहत प्रदान की है। इस क्षेत्र के निवासियों को जल्द सेजल्द लाभान्वित करने के लिए विशेष कैम्प आयोजित कर पेयजल कनेक्शन नियमित रूप से जारी किए जा रहे है। पृथ्वीराज नगर परियोजना में 10 हजार 414 नवीन जल कनेक्शनजलदाय मंत्री ने बताया कि पृथ्वीराज नगर परियोजना के अन्तर्गत 01अगस्त तक 9 हजार 598 नवीनजल संबंध आवेदन पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 4 हजार 501 नवीन पेयजल संबंध विभाग द्वारा जारी कर दिएगए हैं। इनमें से 1 हजार 143 नवीन जलसंबंध आवेदक स्तर पर लम्बित हैं। 3 हजार 802 आवेदन अपूर्ण होने की वजह से निरस्त किये गए हैं तथा 152 जल संबंध आवेदन विभागीय स्तर पर लंबित हैं।उन्होंने बताया कि पृथ्वीराज नगर परियोजना के अन्तर्गत 21 अक्टूबर तक 13 हजार 253 नवीन जल संबंध आवेदन पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 5 हजार 913 नवीन पेयजल संबंध विभाग द्वारा जारी कर दिए गए हैं। इनमें से 2 हजार 217 नवीन जल संबंध आवेदक स्तर पर लम्बित हैं। 2हजार 295 आवेदन अपूर्ण होने की वजह से निरस्त किये गए तथा 2 हजार 719 आवेदन सिस्टम द्वारा निरस्त किये गए। 109 जल संबंध आवेदन विभागीय स्तर पर लंबित है।

डिग्गी मालपुरा रोड़ से टोंक रोड़ के मध्य वाले क्षेत्र में 7 हजार 787 नए कनेक्शन

जलदाय मंत्री ने बताया कि डिग्गी मालपुरा रोड़ से टोंक रोड़ के मध्य वाले क्षेत्र में 01 अगस्त तक 10 हजार 105 नवीन जल संबंध आवेदन पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 2 हजार 185 नवीन पेयजल संबंध जारी किये गये हैं, 3 हजार 396 नवीन जल संबंध आवेदक स्तर पर लम्बित रहे, 2 हजार 238 आवेदन अपूर्ण होने के कारण निरस्त किये गये तथा 2 हजार286 पेयजल संबंध आवेदन विभागीय स्तर पर लंबित हैं। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में 21 अक्टूबर तक 13 हजार 304 नवीन जल संबंध आवेदन पत्र प्राप्त हुए, जिनमें से 5 हजार 542 नवीन पेयजल संबंध विभाग द्वारा जारी कर दिए गए है। इनमें से 1 हजार 949 नवीन जल संबंध आवेदक स्तर पर लम्बित हैं, जबकि 1 हजार 550 आवेदन अपूर्ण होने की वजह से निरस्त किये गए। 4 हजार 04 आवेदन सिस्टम द्वारा निरस्त कर दिए गए तथा 259 जल संबंध आवेदन विभागीय स्तर पर लंबित है। जिन्हें शीघ्र ही निस्तारण कर दिया जाएगा।

राईजिंग राजस्थान- इनवेस्टर मीट पाली का भव्य आयोजन, राज्य सरकार प्रदेश के विकास के लिये कृत संकल्पित: झाबर सिंह खर्रा स्वायत्त शासन राज्य मंत्री

4 हजार 55 करोड़ रुपए के 136 एमओयू, 16 हजार लोगों को मिलेगा रोजगार

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी), 23 अक्टूबर। पाली जिला प्रभारी मंत्री एवं स्वायत्त शासन राज्य मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने कहा कि हमने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री की मंशानुसार प्रदेश के औधोगिक विकास के लिये सभी प्रयास किये जा रहे है, जिनमें बिजली सडक, रेल की कनेक्टिविटी, नियमों का सरलीकरण किया गया है, जिससे कि निवेशकों को अनावशयक परेशानी ना हों और वे सरलता से अपने उद्योग व्यापार को स्थापित कर सके। वे बुधवार को पाली जिले के फालना कस्बे में फालना उद्योग मंडल में जिला प्रशासन, उद्योग केन्द्र, रीको के तत्वावधान में आयोजित राईजिंग राजस्थान- पाली जिला इनवेस्टर मीट में उपस्थित समूह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा है कि प्रदेश विकसित राज्यों की श्रेणी में आ सके जिसके लिये वे कृतसंकल्पित है।समारोह में पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि पाली जिले में पूर्ण संभावनायें हैं कि जो अनुकूल वातावरण उद्योगों के विकास के लिये प्रदान करती है। इस अवसर पर पाली सांसद पीपी चौधरी ने सम्बोधित करते हुये कहा कि पाली जिला औधोगिक विकास की सभी प्रचुर संभावनायें है जिनमें बिजली सड़क बड़े शहरों से कनेक्टिवटी, अनुकुल जलवायु, स्कील श्रमिक आदि उपलब्ध है। इस अवसर पर पाली जिला प्रमुख रश्मि सिंह, बाली विधायक पुष्पेन्द्रसिंह राणावत ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया और अपने सुझाव और क्षेत्र की बातों को रखा। साथ ही बाली क्षेत्र में पर्यटन की संभावनाओं व बातों को रखा। कार्यक्रम में पाली जिला कलक्टर एलएन मंत्री ने निवेशक मीट का परिचय दिया और इस सम्बन्ध में किये गये प्रयासो की जानकारी दी।

एमओयू का हस्तान्तरण किया निवेशको का किया सम्मान, अनुभव किये साझा

कार्यक्रम में 4 हजार 55 करोड रुपए के 136 एमओयू का हस्तान्तरण किया गया और निवेशको का सम्मान भी अतिथियों द्वारा किया गया।

संक्षिप्त समाचार

योगी सरकार का खत्म हो चुका इकबाल, प्रदेश में कानून व्यवस्था ध्वस्त : शिवपाल यादव

सुल्तानपुर/एजेंसी। समाजवादी पार्टी राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए योगी सरकार पर हमला बोला है।

अंबेडकरनगर के कटेहरी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में शोभावती वर्मा के नामांकन कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे शिवपाल यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज है ही नहीं। सूबे में लगातार हत्याएं हो रही हैं। योगी सरकार का इकबाल पूरी तरह से खत्म हो चुका है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरी तरह से जनता का विश्वास खो चुकी है।

शिवपाल यादव ने उपचुनाव में समाजवादी पार्टी और उसके सहयोगी इंडिया गठबंधन की जीत का बड़ा दावा किया। उन्होंने मिल्कीपुर विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव को लेकर कहा कि चुनाव आयोग इस सीट पर जब फैसला लेगा, तब यहां चुनाव होगा। मुझे भरोसा है कि मिल्कीपुर सीट भी समाजवादी पार्टी ही जीतेगी।

उत्तर प्रदेश की 10 विधानसभा सीटें फिलहाल खाली हैं, लेकिन चुनाव आयोग ने नौ सीटों पर ही उपचुनाव की तारीखों की घोषणा की है। अयोध्या की मिल्कीपुर सीट पर चुनाव नहीं होंगे, जिस पर पूरे प्रदेश की निगाहें थीं।

वहीं बहराइच घटना पर शिवपाल यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लोगों द्वारा कराई गई यह घटना है। सभी ने देखा खुद भाजपा के विधायक ने भाजपा के लोगों पर एफआईआर लिखवाया है।

सुलतानपुर में व्यापारी हत्याकांड पर शिवपाल यादव ने कहा कि भाजपा सरकार निष्पक्ष नहीं है। ये बईमान सरकार है, इसलिए पूरे प्रदेश में घटनाएं हो रही हैं।

राजस्थान के बहरोड़ में बस-ट्रॉली की भीषण टक्कर में तीन की मौत

बहरोड़/एजेंसी। राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़ जिले में जयपुर-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर बुधवार को एक बस और ट्रैक्टर-ट्रॉली के बीच टक्कर हो गई, जिसमें एक चालक और दो महिलाओं समेत तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 46 अन्य घायल हो गए।घटना बुधवार सुबह की है। अधिकारियों ने बताया कि 46 घायल बस यात्रियों में से 17 की हालत गंभीर है और उन्हें जयपुर के एक अस्पताल में रेफर किया गया है।

जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल ने बताया कि बस सवार अजमेर से दिल्ली राधास्वामी सत्संग में भाग लेने जा रहे थे, तभी कोटपूतली के कंवरपुरा स्टैंड पर सुबह करीब पांच बजे यह दुर्घटना हुई।

कोटपूतली थानाधिकारी राजेश शर्मा ने बताया, राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक स्लीपर बस अजमेर से दिल्ली जा रही थी, तभी कंवरपुरा स्टैंड के पास आगे जा रही ट्रैक्टर-ट्रॉली से उसकी टक्कर हो गई। सभी घायलों को राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल लाया गया, जहां से गंभीर रूप से घायल सवारियों को जयपुर रेफर कर दिया गया।

हादसे की सूचना मिलने पर कलेक्टर, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट (एडीएम) और पुलिस अधीक्षक (एसपी) सहित पुलिस और प्रशासन के अधिकारी अस्पताल पहुंचे।

उन्होंने बताया कि ट्रॉली चालक दुर्घटना के तुरंत बाद भाग गया। पुलिस ने विभिन्न स्थानों पर नाकाबंदी कर दी है।

जिला कलेक्टर अग्रवाल ने बताया कि बस में सवार सभी यात्री अजमेर के थे। सत्संग के लिए चार बसें एक साथ अजमेर से रवाना हुई थीं। इनमें से एक बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। मृतकों की पहचान अलवर निवासी माया, ब्यावर निवासी सुनीता साहू और जयपुर निवासी बस चालक विशाल शर्मा के रूप में हुई है। दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाया जा रहा है। मामले की जांच की जा रही है।

भरतपुर : ज़मीन विवाद में खूनी संघर्ष, फायरिंग में दो लोग गंभीर रूप से घायल

भरतपुर/एजेंसी। जिले के सेवर थाना क्षेत्र के गांव गढ़ी झालिम सिंह में ज़मीन विवाद के चलते दो पक्षों के बीच खूनी संघर्ष हो गया। इस झगड़े के दौरान एक पक्ष के चार लोगों ने दूसरे पक्ष पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी, जिसमें दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को तुरंत जिला आरबीएम अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया है और उनकी हालत नाज़ुक बनी हुई है।घटना की जानकारी मिलते ही सीओ ग्रामीण आकांक्षा और सेवर थाना पुलिस ने आरबीएम अस्पताल पहुंचकर स्थिति का जायज़ा लिया। बताया जा रहा है कि विवाद तब शुरू हुआ जब पीड़ित पक्ष की ज़मीन को आरोपी पक्ष जबरन जोतने की कोशिश कर रहा था। विरोध करने पर स्थिति बेकाबू हो गई और फायरिंग तक जा पहुँची। फ़िलहाल पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है और आरोपियों की तलाश तेज़ कर दी गई।

विधानसभा अध्यक्ष देवनानी पहुँचे एस.एम.एस अस्पताल, दुर्घटना में घायल हुए लोगों के जाने हाल

परिजनों को दिलाई हिम्मत, चिकित्सा व्यवस्था की ली जानकारी

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को एस.एम.एस अस्पताल के बांगड और ट्रोमा सेन्टर में पहुँचकर घायल लोगों के स्वास्थ्य और चिकित्सीय उपचार की जानकारी ली। देवनानी को अजमेर के घायल लोगों ने बताया कि अजमेर के 40 लोगों का एक दल आध्यात्मिक यात्रा के लिए बस से दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। कोटपूतली के समीप एक ट्रोले ने टक्कर से उनकी बस को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया। बस में सवार लोगों ने देवनानी को बताया कि इस दुर्घटना में तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, दो यात्रियों की हालत खराब है और 35 यात्री घायल हुए है। ये सभी यात्री अजमेर के निवासी है। देवनानी को दुर्घटना की जानकारी मिलने पर तुरन्त एस.एम.एस अस्पताल पहुँचे। देवनानी ने वहां ईलाज ले रहे सभी घायलों के पास जाकर उनके स्वास्थ्य और उपचार की जानकारी ली। उपचार कर रहे चिकित्सकों को आवश्यक निर्देश दिए। देवनानी ने घायल लोगों और उनके परिजनों को हिम्मत दिलाई। देवनानी गहन चिकित्सा ईकाई में उपचार ले रहे गम्भीर रूप से घायल दो लोगों के पास भी गए और उनके पूरी तरह से देखभाल व चिकित्सा के लिए अस्पताल प्रशासन को निर्देश दिए।

चिकित्सक शिक्षकों के 1476 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 24 अक्टूबर

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। राजस्थान मेडिकल एज्युकेशन सोसायटी के माध्यम से चिकित्सक शिक्षकों के 1476 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 24 अक्टूबर, 2024 है। अभ्यर्थी आवेदन की हार्ड कॉपी दस्तावेज सहित चिकित्सा शिक्षा निदेशालय में 25 अक्टूबर 2024 को सायं 5 बजे तक जमा करवा सकेंगे। चिकित्सा शिक्षा आयुक्त इकबाल खान ने बताया कि राजस्थान मेडिकल एज्युकेशन सोसायटी ने चिकित्सक शिक्षकों के 1476 पदों पर आवेदन के लिए विज्ञप्ति जारी की थी। इसमें विभिन्न विभागों के लिए प्रोफेसर के 246 पद, एसोसियेट प्रोफेसर के 565 पद एवं असिस्टेंट प्रोफेसर के 665 पद शामिल हैं। चयनित अभ्यर्थियों को राजस्थान मेडिकल एज्युकेशन सोसायटी मेडिकल टीचर्स (रिक्रूटमेंट, प्रमोशन एवं पे) रूल्स-2024 के तहत वेतन-भत्ते देय होंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल एवं चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देशों पर राजमेस के माध्यम से कार्यरत चिकित्सक शिक्षकों की वेतन विसंगति में सुधार की बहुप्रतीक्षित मांग को राज्य सरकार ने पूरा किया था। इसके तहत अब नए चिकित्सक शिक्षकों को चिकित्सा शिक्षा सेवा नियम-1962 के अनुसार वेतन-भत्तों का लाभ मिल सकेगा।

साइबर फ्रॉड को लेकर पुलिस मुख्यालय ने जारी की एडवाइजरी

- **लालच में आकर साइबर ठगों को अपना बैंक खाता किराए पर उपलब्ध नहीं कराएं**

चमकता राजस्थान। जयपुर !(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। साइबर ठगी के लगातार बढ़ते ऐसे मामले जिसमें आमजन अज्ञानता, लालचवश या बैंककर्मी से मिलीभगत कर साइबर क्रिमिनल को बैंक खाता किराए पर उपलब्ध कराते हैं, ऐसे मामलों का संज्ञान में लेते हुए पुलिस मुख्यालय की साइबर क्राइम शाखा ने एडवाइजरी जारी की है। महानिदेशक पुलिस,साइबर क्राइम राजस्थान, हेमंत प्रियदर्शी ने बताया कि प्रदेश में महानिदेशक पुलिस राजस्थान उत्कल रंजन साहु के मार्गदर्शन में साइबर अपराधों पर अंकुश लगानें एवं आमजन में साइबर जागरूकता लाने के उद्देशय से लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। प्रियदर्शी ने बताया कि प्रदेश में इन दिनों साइबर ठग गरीब, बेरोजगार एवं आमजन को प्रलोभन एवं लालच देकर उनके बैंक अकाउंट को किराये पर लेकर साइबर अपराध के लिए उपयोग में ले रहे है। ऐसे करने वाले व्यक्ति अज्ञानतावश या लालच में आकर स्वयं भी साइबर अपराधों में लिप्त हो जाते है। यह भी संज्ञान में आया है कि प्रदेश के जिलों में साइबर ठगो द्वारा बैंक खाते मे कमीशन का लालच देकर खाताधारकों के बैंक खाते संदिग्ध लेन-देन के लिए उपयोग में लिये गये है।

- **साइबर ठगों को नहीं दे अपने बैंक खाता**

» डीजी हेमंत प्रियदर्शी ने अपील की है कि किसी प्रलोभन, कमीशन व लालच में आकर अपना बैंक अकाउंट किसी भी अन्य व्यक्ति को उपयोग लेने के लिए नहीं दे। ऐसा करने पर साइबर अपराध में लिप्त खाताधारक स्वयं जिम्मेदार होंगे।

- **बैंक कार्मिकों की आपराधिक जिम्मेदारी तय होगी**

» उन्होंने बताया कि कई बैंक कार्मिको द्वारा जहां ऐसे म्यूल अकाउंट खोले गये, उनकी अपराधिक जिम्मेदारी तय की जाकर विधिक कार्यवाही की गई थी व भविष्य में भी सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

- **पुलिस मुख्यालय से सभी जिलों को विशेष दिशा-निर्देश जारी**

» डीजीए साइबर अपराध प्रियदर्शी ने बताया कि इस संबंध में पुलिस मुख्यालय से सभी जिला पुलिस अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि कलेक्टर कार्यालय, पुलिस थानों के सामने पम्पलेट, होर्डिंग्स लगाकर आमजन में सन्देश प्रसारित किया जावें ताकि साइबर अपराध से अनभिज्ञ लोगो में जागरूकता फैलाई जा सके। उक्त कार्यक्रम में पुलिस मित्र, महिला सुरक्षा सखी, साइबर वॉलिन्टियर, सीएलजी सदस्य के साथ-साथ जन सहभागिता ली जा सकती है।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के उद्यमिता विकास कार्यक्रम से संबंधित बैंकों में लंबित प्रकरणों पर चर्चा के लिए विभिन्न बैंकों के साथ बैठक आयोजित

योजना का सही लाभ सही समय पर मिलने से ही योजना का उद्देशय पूरा हो सकता है: डॉ समित शर्मा शासन सचिव, पशुपालन

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। शासन सचिव पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी डॉ. समित शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को राष्ट्रीय पशुधन मिशन के उद्यमिता विकास कार्यक्रम से संबंधित बैंकों में लंबित प्रकरणों पर चर्चा के लिए बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।बैठक में डॉ. शर्मा ने पशुपालन विभाग को जिला स्तरीय नोडल अधिकारी बनाने के निर्देश दिए जो बैंकों और आवेदकों/उद्यमियों के बीच समन्वय का काम करें। इससे आवेदकों को ऋण लेने में आ रही परेशानियों को दूर किया जा सकेगा। उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि बैंक अपने लोन के लिए आवश्यक चेकलिस्ट विभाग को दें और विभाग अपनी चेक लिस्ट को उसमें शामिल करते हुए एक नई चेकलिस्ट बनाए। आवेदक को भविष्य में यही चेकलिस्ट व्हाट्सअप या अन्य किसी माध्यम से उपलब्ध कराई जाए। ऐसा करने से दो अलग अलग चेकलिस्ट से होने वाली परेशानी से भी बचा जा सकता है। डॉ शर्मा ने बैंक प्रतिनिधियों को आवेदन की प्रक्रिया पर त्वरित कार्यवाही करने का निर्देश देते हुए कहा कि हितग्राहियों/ लाभार्थियों को योजना का सही लाभ सही समय पर मिलने से ही योजना का उद्देशय पूरा हो सकता है।उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय पशुधन मिशन उद्यमिता विकास कार्यक्रम रोजगार सृजन के उद्देशय से पशुधन क्षेत्र के विकास के लिए भारत सरकार के पशुपालन एवं डेयरी विभाग की एक महत्वपूर्ण पहल है। इसके अंतर्गत मुख्यतः पशु नस्ल विकास तथा उद्यमिता विकास की गतिविधियों को शामिल कर बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार उपलब्ध कराने के लिए कुक्कुट पालन, भेड़ बकरी पालन, सुअर पालन आदि के लिए ऋण एवं अनुदान दिए जाने का प्रावधान है। इच्छुक उद्यमियों को बैंकों से 50 प्रतिशत का ऋण एवं भारत सरकार द्वारा 50 प्रतिशत का अनुदान उपलब्ध करवाया जाता है।बैठक में पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. भवानी सिंह राठौड़, अतिरिक्त निदेशक (योजना एवं पर्यवेक्षण) डॉ. आनंद सेजरा, उप निदेशक एवं परियोजना समन्वयक डॉ. बी एम गोयल तथा विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

रुपहले पर्दे से गायब होता रोशनी का पर्व दीपावली

एक वो भी दीवाली था
एक ये भी दीवाली है।
उजड़ा हुआ गुलशन है
रोता हुआ माली है।।

दीपावली जैसे पर्व को भुनाने में हमारे फिल्मकार भी पीछे नहीं रहें हैं। कभी फिल्म की पटकथा को दीपावली से जोड़ कर तो कभी फिल्म में दीपावली का गाना फिल्माकर। सौ साल के सिनेमा इतिहास पर नजर डालने पर हम पाते है कि 1949 में बनी फिल्म का नाम ही दीवाली रखा गया था। जिसका निर्माण रंजीत मूवीटॉन द्वारा किया गया था। इसे जयंत देसाई द्वारा निर्देशित किया गया थ। इस फिल्म का एक गीत दीपावली पर आधारित 'जला दीपक दीवाली आई.. आज भी सिने प्रेमियों की जेहन में ताजा है। इसके साथ ही फिल्मकारों द्वारा इस पर्व को भुनाने का सिलसिला चल पड़ा। गजानन जागीरदार की फिल्म घर घर में दीवाली, दीपक आशा की फिल्म 'दीवाली की रात आयी.. । बाद में यह दौर थमा और धीरे धीरे प्रकाश पर्व पर आधारित फिल्में रूपहले पर्दे से लगभग गायब हो चला।

हां इसके बदले में फिल्मकार दीपावली का इस्तेमाल फिल्म में अहम मोड़ के रूप में करने लगे। 70 के दशक की बनी भारतीय सिनेमा के इतिहास की पहली मल्टी स्टारर फिल्म वक्त में विनाशकारी भकंप के पहले दीपावली पर्व को बड़े ही मनोयोग से मनाते फिल्माया गया है। इसी क्रम मे लोगों के जेहन में फिल्मकार प्रकाश मेहरा निर्देशित व सुपर स्टार अमिताभ बच्चन की फिल्म 'जंजीर' बरबस याद आ जाती है। जंजीर का वह डायलॉग- उस रात भी दीवाली थी और आज भी दीवाली है ..लोगों की जुबान पर आज भी है। फिल्म में दीवाली की रात वे अपने माता पिता खो देता है और दीवाली की वह रात उसके वजूद को बदल देता है। अंत में नायक दीवाली की रात ही खलनायक से बदला लेता है और वह डायलॉग बोलता है।बाद में फिल्मों में दीवाली का सेलेब्रेशन गीतो के माध्यम से होने लगा। पांचोली पिक्चर्स की फिल्म खजांची का गीत दीवाली फिर से आ गई सजनी को खूबसूरत बंदिश और बोलों के लिये लोग आज भी गुनगुनाते हैं। 1943 में बनी फिल्म किस्मत का गीत 'घर घर में दीवाली है, मेरे घर में अंधेरा.. के प्रति लोगों में दीवानगी का आलम यह था कि फिल्म किस्मत कलकत्ता के एक थियेटर में तीन साल आठ महिने चल कर एक रिकॉर्ड बनाया था। इसी वर्ष कुंदन लाल सहगल की आवाज में एक गीत ' दीया जलाओ जगमग जगमग ... खूब गूंजा था। फिल्म तानसेन के इस गीत को खेमचंद प्रकाश ने संगीतबद्ध किया था। जोहरा बाई अम्बाले वाली ने अपनी आवाज में घर घर नामक फिल्म में एक प्रसिद्ध गीत गाया दीप जले घर घर में आई दीवाली, कटी रात काली आई दीवाली .. ने इतनी लोकप्रियता बटोरी कि हिंदुस्तान में कुछ वर्षों के लिये यह दीवाली का ब्रांड गीत बन गया।

1944 में प्रदर्शित फिल्म रतन का दर्दिला गीत आई दीवाली दीपक संग नाचे पतंगा ... की लोकप्रियता का आलम यह था कि इस गीत के संगीतकार नौशाद के नाम का डंका बजने लगा। 1948 में बनी फिल्म पगड़ी का गीत आई दीवाली दीप जला जा.. भी दीवाली के महत्व को उजागर करता है। अपने जमाने के प्रसिद्ध अभिनेता सोराब मोदी ने भी घर घर में दीवाली नाम से एक फिल्म का निर्माण किया था। 1956 में दीवाली की भावना को एक बार फिर से गम के माहौल में फिल्म दीवाली की रात मे दिखाया गया। तलत महमूद अभिनित इस फिल्म ने सफलता का परचम लहराया था। एक वो भी दीवाली था, एक ये भी दीवाला है, उजड़ा हुआ गुलशन है, रोता हुआ माली है... फिल्म नजराना का यह गीत लोगों के दिल में अपनी कशिश बरकरार रखे हुए है। फिल्म संत गयानेश्वर के गीत जोत से जोत जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो, फिल्म भाभी की चूड़ियां का ज्योति कलश छलके, शिरडी के साई बाबा फिल्म का गीत दीपावली मनाये सुहानी... फिल्म डोली का जो मुस्कुराया हुआ है .. फिल्म हरियाली और रास्ता का देख के दुनियां की दीवाली दिल मेरा चुपचाप जला.. फिल्म रंगोली का रंगोली सजाओ रे .. फिल्म पैगाम का कैसे मनायें दीवाली लाला ... फिल्म बीस साल बाद का कहीं दीप जले कहीं दिल... फिल्म नमक हराम का दीये जलते हैं फूल खिलते हैं... फिल्म मांग भरो सजना का दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे रे.... एसे गीत है जिन्हें आज भी काफी पसंद करते हैं। बदलते वक्त के साथ दीवाली का स्वरूप भी बदला। फलस्वरूप रूपहले पर्दे पर भी दीपावली का महत्व कम होता नजर आया। जबकि फिल्म कार को दीवली के पीछे छिपे दर्शन को फिल्म का विषय वस्तु बनाकर दीवाली के महत्व से समाज को एक संदेश देने का कार्य भी करना चाहिये।

संक्षिप्त समाचार

भरतपुर जिले में थाना मथुरा गेट पुलिस की कार्रवाई

- सरकारी नौकरी लगवाने का झांसा देकर ठगी का आरोपी गिरफ्तार
- पुलिस का अधिकारी बनकर बेरोजगार गरीब बच्चों को देता था झांसा

चमकता राजस्थान। जयपुर/भरतपुर,(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। भरतपुर जिले की मथुरा गेट थाना पुलिस ने ऐसे शातिर ठग अमरचंद गडरिया पुत्र हीरालाल बघेल (48) निवासी पिडयानी थाना चिकसाना को गिरफ्तार किया है, जो सरकारी नौकरी लगवाने के नाम पर गरीब बेरोजगार बच्चों को अपना शिकार बनाता था। वर्दी में फोटो दिखा पुलिस अधिकारी बनकर जाल में फंसाता और उनसे मोटी रकम ऐंठ लेता।एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि 19 अक्टूबर को न्यू सिविल लाइंस कॉलोनी निवासी पिंकी जाट पत्नी कुलदीप ने थाना मथुरा गेट पर रिपोर्ट दी कि 10 जनवरी 2019 को आरोपी अमरचंद बघेल ने उसके भाई को सरकारी नौकरी लगवाने का झांसा देकर उससे 5.50 लाख रुपये लेकर हड़प लिए। रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की गई।एसपी कच्छावा ने बताया कि वांछित अपराधियों की धर पकड़ के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सतीश यादव व सीओ पंकज यादव के सुपरविजन एवं एसएचओ करण सिंह के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा आरोपी अमरचंद बघेल को आसूचना संकलन एवं तकनीकी सहायता के आधार पर दस्तयाब कर गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी से अग्रिम पूछताछ की जा रही है।

इंस्पेक्टर या डीएसपी की वर्दी पहन खुद को सीआईडी अधिकारी बताता

आरोपी अमरचंद बघेल पुलिस निरीक्षक एवं डीएसपी की वर्दी पहन कर अपने आप को सीआईडी का अधिकारी बताता अलग-अलग स्थान पर जाकर पढ़ने वाले बच्चों के सामने फर्जी वर्दी पहन सरकारी नौकरी दिलवाने का झांसा देकर लाखों रुपए ठग लेता। इसके साथ ही विभिन्न मुकदमो में उच्च अधिकारियों व सीआईडी से मदद कराने का झांसा देकर भी ठगी किया करता था। आरोपी वारदात के लिए अलग-अलग सिम लेकर बातचीत करता था।

समाजसेवी चेतन जैन निमोडियों राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से करी शिष्टाचार मुलाकात

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी)- 23 अक्टूबर। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े से राजभवन में मुलाकात कर राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के सांगानेर सम्भाग के अध्यक्ष युवा समाजसेवी चेतन जैन निमोडिया ने जैन समाज की ओर से अभिनन्दन किया ।

इस मौके पर चेतन जैन निमोडिया ने भगवान महावीर के 2550 वें निर्वाणोत्सव की सम्पन्नता एवं 2551 वां निर्वाणोत्सव वर्ष 01 नवम्बर से प्रारंभ होने की जानकारी दी।

पुलिस विभाग में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सतत फोकस हो: यू. आर. साहू पुलिस महानिदेशक

डीजीपी ने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता में योगदान के लिए 45 पुलिस कार्मिकों को किया सम्मानित

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) और राजस्थान पुलिस आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड (आरपीआईडीसीएल) के अध्यक्ष उत्कल रंजन साहू ने कहा कि पुलिस विभाग के तहत निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सतत फोकस जरूरी है साहू बुधवार को पुलिस मुख्यालय में आरपीआईडीसीएल के तहत निर्माण कार्यों की गुणवत्ता, निगरानी और रख-रखाव के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों के सम्मान के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कॉरपोरेशन द्वारा बनाई गई बिल्डिंग्स के लीक से हटकर डिजाइन और कार्यों में क्वालिटी के लिए एडीजी हाऊसिंग तथा आरपीआईडीसीएल की प्रबंध निदेशक बिनीता ठाकुर और निगम की पूरी टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए उनको बधाई दी। कार्यक्रम में डीजीपी ने निगम में निर्माण कार्यों के प्रबंधन एवं दे-खरेख से जुड़े अधिकारियों सहित 45 पुलिस कार्मिकों नगद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। डीजीपी ने दानाराम गेंवा, उप महाप्रबंधक (तकनीकी), रमेश कुमार, उप महाप्रबंधक, जयपुर, धनराज नायक, सहायक महाप्रबंधक, जयपुर और अनिल कुमार साहू, सहायक महाप्रबंधक (विद्युत), जयपुर को 10-10 हजार रुपये की नगद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया। उन्होंने अर्जुन लाल जाट, सहायक लेखाधिकारी द्वितीय, गजेन्द्र सिंह, प्लाटून कमाण्डर, सातवीं बटालियन आरएसी, भरतपुर, राजेश कुमार, सहायक उपनिरीक्षक, पुलिस आयुक्तालय जयपुर को पांच-पांच हजार रुपये नगद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया इसी प्रकार गीता रावत, कांस्टेबल चतुर्थ बटालियन आरएसी चैनपुरा जयपुर, अजय कुमार त्वीनवाल, कांस्टेबल, पुलिस आयुक्तालय जयपुर, सौरभ उपाध्याय कांस्टेबल, एम.बी.सी. बांसवाड़ा, रामसिंह, कांस्टेबल, पांचवी बटालियन आरएसी, जयपुर, सुमन महिला कांस्टेबल, सीकर, सीताराम, कांस्टेबल, सातवीं बटालियन आरएसी भरतपुर, भूराराम, कांस्टेबल, तृतीय बटालियन आरएसी, बीकानेर, धन्नाराम, कांस्टेबल, तृतीय बटालियन आरएसी, बीकानेर, मनोज, हैड कांस्टेबल, महाराणा प्रताप बटालियन, प्रतापगढ़, जसवंत, हैड कांस्टेबल, आरपीटीसी जोधपुर, मोहनसिंह, कांस्टेबल, चित्तौड़गढ, ओमप्रकाश यादव, कांस्टेबल, झुन्झुनू, तुलसीराम चौहान कांस्टेबल, चतुर्थ आरएसी जयपुर, अनिता महिला कांस्टेबल, 716 चतुर्थ आरएसी चैनपुरा, जयपुर, मदन लाल कांस्टेबल, उदयपुर, देवीलाल कांस्टेबल, महाराणा प्रताप बटालियन आरएसी (आईआर) प्रतापगढ़, रामनिवास कांस्टेबल, नागौर, आजोदया महिला कांस्टेबल, नागौर रमेश कांस्टेबल, पुलिस आयुक्तालय जोधपुर, ईश्वर कांस्टेबल, झुन्झुनू, सुगनी महिला कांस्टेबल, बीकानेर, जितेन्द्र कुमार, कांस्टेबल, बीकानेर और कौशल्या कांस्टेबल, तृतीय आरएसी बीकानेर को 2-2 हजार रुपये नगद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गय इस प्रकार पप्पाराम हैड कांस्टेबल, पीटीएस, जोधपुर, पीयूष कांस्टेबल, चुरूराहुलकांस्टेबल,सिरोही, रत्नी देवी महिला कांस्टेबल, प्रथम आरएसी जोधपुर, समय सिंह, कांस्टेबल, पीटीएस खैरवाड़ा, शिवकुमार, कांस्टेबल, उदयपुर, चेनाराम, कांस्टेबल, अजमेर, श्रवण, कांस्टेबल, पुलिस आयुक्तालय, जोधपुर, गुणेशाराम, कांस्टेबल, बाड़मेर,ओमप्रकाश, कांस्टेबल, महाराणा प्रताप बटालियन, प्रतापगढ़, रामसिंह,कांस्टेबल, कोटा शहर, शिवचरण, कांस्टेबल, अजमेर, सुनिल, कांस्टेबल, झालावाड़, चरणसिंह, कांस्टेबल, श्रीगंगानगर और लालचन्द, कांस्टेबल, पुलिस आयुक्तालय, जयपुर को भी दो-दो हजार रुपये की नगद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

एसीबी ने दिया प्रभावी कार्रवाई को अंजाम

जयपुर में पुलिस थाना खोह-नागोरियान का सहायक उपनिरीक्षक पुलिस एवं दलाल (प्राईवेट व्यक्ति) 50 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर, बुधवार। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. की जयपुर नगर-तृतीय इकाई द्वारा आज कार्यवाही करते हुये बलबीर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस, पुलिस थाना खोह-नागोरियान, जयपुर आयुक्तालय एवं उसके दलाल केशव सिंह (प्राईवेट व्यक्ति) को परिवादी से 50 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक पुलिस डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि ए.सी.बी. की जयपुर नगर-तृतीय इकाई को परिवादी द्वारा एक शिकायत इस आशय की दी गई कि उसके एवं उसके भाई के विरूद्ध दर्ज मुकदमें में कार्यवाही नहीं कर आरोपी नहीं बनाने की एवज में आरोपी अनुसंधान अधिकारी बलबीर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस, पुलिस थाना खोह-नागोरियान, जयपुर आयुक्तालय द्वारा अपने दलाल केशव सिंह (प्राईवेट व्यक्ति) के माध्यम से 1 लाख रुपये रिश्वत राशि मांग कर परेशान किया जा रहा है।जिस पर एसीबी जयपुर-द्वितीय के उप महानिरीक्षक पुलिस राहुल कोटोकी के सुपरवीजन में ए.सी.बी. की जयपुर नगर-तृतीय इकाई के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ज्ञान प्रकाश नवल के नेतृत्व में शिकायत का सत्यापन किया जाकर उप अधीक्षक पुलिस सुरेश स्वामी द्वारा मय टीम के ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपी दलाल केशव सिंह (प्राईवेट व्यक्ति) को परिवादी से 50 हजार रुपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है। प्रकरण में आरोपी बलबीर सिंह सहायक उपनिरीक्षक पुलिस को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। उल्लेखनीय है कि ट्रेप कार्यवाही के दौरान आरोपी बलवीर सिंह स.उ. नि. के थाना परिसर में स्थित सरकारी आवासीय क्वाटर की तलाशी में 1 लाख 82 हजार रुपये की संदिग्ध नगद राशि भी बरामद हुई है, जिसके संबंध में आरोपी कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दे पाया।एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के सुपरवीजन में आरोपीगण से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

ट्रेप कार्यवाही के दौरान तलाशी में आरोपी स.उ.नि. से 1 लाख 82 हजार रुपये की संदिग्ध नकद राशि भी बरामद हुई

हमें बहनो को काम करना नहीं, धन कमाना सिखाना होगा- रूमा देवी

- सोच बदलें, जीवन में लक्ष्य क्लियर रखो - तनाजा ईरानी
- महिलाओं के सामाजिक व व्यवसायिक बदलावों पर हुई चर्चा

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी):- झालाना डूंगरी स्थित राजस्थान कन्वेंशन सेंटर में जीतो लेडिज विंग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और भारतीय फैशन डिजाइनर डॉ रूमादेवी व बॉलीवुड एक्ट्रेस तनीजा ईरानी जयपुर वासीयों से रूबरू हुई। इस कार्यक्रम में डॉ रूमादेवी ने राजस्थान के क्राफ्ट वर्क के महत्व पर अपने अनुभव साझा करते हुए अपनी ग्लोबल जर्नी पर बात करते हुए कहा कि हमें बहनों को काम नहीं धन कमाना सिखाना है। हमें आगे बढने के लिए सबको साथ लेकर चलना ही है साथ ही हमें अपनी भाषा और पहनावे को भी साथ लेकर चलना होगा।एक्ट्रेस तनाज ईरानी ने जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए सोच में बदलाव पर बात की।जीटो लेडीज विंग चैप्टर की मेघना जैन व प्रेरणा रांका ने जीटो लेडीज विंग के जयपुर चैप्टर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रश्नोत्तर के सत्र में फैशन व अलग अलग इंडस्ट्रीज की प्रमुख हस्तियों ने मुख्य वक्ताओं से अपने सवाल रखे।कार्यक्रम में जैन इंटरनेशनल ट्रेड आर्गनाइजेशन के पदाधिकारी, व्यवसाय, फैशन, टेक्सटाइल और समाजसेवा जगत से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियां और महिला उद्यमी उपस्थित रही।

संसदीय कार्य मंत्री ने अणतपुरा चिमनपुरा में नव निर्मित स्वास्थ्य केंद्र का किया लोकार्पण

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 23 अक्टूबर। संसदीय कार्य, विधि एवं न्याय मंत्री एवं जिला प्रभारी मंत्री जोगाराम पटेल ने बुधवार को अणतपुरा चिमनपुरा में 42 लाख रुपए की लागत से नवनिर्मित उप स्वास्थ्य केंद्र का विधिवत लोकार्पण किया। इस अवसर पर ग्राम पंचायत अणतपुरा चिमनपुरा में वर्ष 2020 के पश्चात राजकीय सेवा में चयनित युवाओं को सम्मानित किया गया। श्री पटेल ने कहा प्रदेश सरकार 'लक्ष्य-अंत्योदय,पथ- अंत्योदय, प्रण-अंत्योदय' के ध्येय के साथ विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार रूप देने के लिए पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

प्रदेश सरकार का ध्येय 'लक्ष्य-अंत्योदय,पथ- अंत्योदय, प्रण-अंत्योदय' : जिला प्रभारी मंत्री

ईआरसीपी से पूर्वी राजस्थान में पेयजल समस्या का होगा स्थाई समाधान

संसदीय कार्य मंत्री ने कहा पेयजल समस्या के स्थाई समाधान के लिए प्रदेश सरकार द्वारा वर्षों से लंबित 'ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट' (ईआरसीपी) और यमुना जल समझौते के कार्य पूर्ण कर दिया है। इसका लाभ पूर्वी राजस्थान की जनता को पेयजल एवं सिंचाई के रूप में मिलेगा।

सर्वस्पर्शी एवं सतत विकास के लिए ऐतिहासिक बजट प्रदेशवासियों को समर्पित

जिला प्रभारी मंत्री ने कहा प्रदेश सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान के सर्वस्पर्शी एवं सतत विकास के लिए ऐतिहासिक बजट प्रदेशवासियों को समर्पित किया है। उन्होंने कहा बजट घोषणाओं की क्रियान्विति के लिए प्रभावी मॉनिटरिंग की जा रही है और भूमि आवंटन संबंधी कार्य लगभग पूर्ण किया जा चुका हैं। प्रदेश सरकार ने युवाओं के रोजगार के लिए, किया रोडमैप तैयार पटेल ने कहा युवाओं के रोजगार के लिए प्रदेश सरकार ने रोडमैप तैयार कर इस वर्ष एक लाख एवं आगामी 5 वर्षों में चार लाख सरकारी नौकरी दी जाएगी। उन्होंने युवा हितों को ध्यान में रखकर प्रदेश पेपर लीक गिरोह पर कड़ी कार्रवाई की जा रही है। साथ ही भर्ती प्रक्रिया को पारदर्शी ढंग से संपादित करने के लिए आवश्यक कार्यवाही भी की जा रही है।

वर्ष 2027 तक राजस्थान बिजली उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा

पटेल ने कहा वर्ष 2027 तक सौर एवं पवन ऊर्जा के माध्यम से राजस्थान बिजली उत्पादन में आत्मनिर्भर प्रदेश बन जाएगा। वर्ष 2027 तक प्रदेश सरकार किसानों को दिन में बिजली, 24 घंटे घरेलू बिजली एवं उद्योगों को आवश्यकतानुसार बिजली उपलब्ध करवाएगी।मजबूत हो रहा स्वास्थ्य ढांचा पटेल ने कहा प्रदेश के स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत बनाने के लिए पर्याप्त संख्या में स्वास्थ्य केंद्र, सैटलाइट एवं जिला अस्पताल बनाए गए है। साथ ही मार्च 2025 तक चिकित्सकों एवं पैरा मेडिकल स्टॉफ के पदों पर लगभग 52000 कार्मिकों के नियुक्ति की प्रक्रिया पूर्ण की जाएगी।

कृषक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध प्रदेश सरकार

पटेल ने कहा प्रदेश सरकार कृषि एवं किसान कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत मिलने वाली 6000 रुपए को राज्य सरकार ने बढ़ाकर 8000 रुपए किया है। साथ ही गेहूं के न्यूनतम समर्थन मूल्य को बढ़ाकर किसानों की फसल बेहतर मूल्य दिलाया जा रहा है।कार्यक्रम में पूर्व विधायक रामलाल शर्मा, पंचायत समिति गोविंदगढ़ प्रधान रामस्वरूप यादव, सरपंच बद्री प्रसाद यादव, जिला परिषद सदस्य जीतू देवी बुनकर, उपखंड अधिकारी दिलीप सिंह,तहसीलदार विजयपाल विश्नोई एवं बीसीएमओ जेपी सैनी सहित जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929